हमारे बेजोड़ परिणाम देने वाले उत्पाद

पशुपालकों के लिए जनहित में प्रकाशित

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

ऐनिमैक्स फार्मा प्रा० लि०

120, पहली मंजिल, आर जी मॉल, सैक्टर-9,
रोहिणी, नई दिल्ली - 110085
ग्राहक सेवा नम्बर : 09891321775
Email : animaxpharma@gmail.com
Visit us : www.animaxpharma.in

design@9216070680

ANIMAX PHARMA PVT. LTD.

उत्पादन पुस्तिका : 2020

पशु स्वास्थ्य की सेवा में

पशु पालकों को सरल व बोल-चाल की
भाषा में समझाने का प्रयास

राष्ट्र के अन्न दाता

तथा

मेरे माता जी व पिता जी को

समर्पित

विषय सूची

शीर्षक		पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना		1
पशुओं में नस्ल सुधार क्यों और कैसे ?		2-3
पशुओं से हर साल एक बच्चा क्यों और कैसे ?		4-7
बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर	(भारत का सबसे बढ़िया चिलेटिड खनिज मिश्रण)	8-11
सिमलेज बोलस	(दूध उतारने व दूध बढ़ाने के लिए)	12-15
अडर-एच	(अडर की सम्पूर्ण देखभाल के लिए)	16-18
होली के आस-पास पशुओं को नए दूध करवाने का तरीका		19
यूट्राविन	(जेर गिराने व गर्भाशय की सफ़ाई के लिए)	20-21
कूलमैक्स पॉउडर	(गर्मी से राहत प्रदान करने के लिए)	22-23
डाइजामैक्स फोर्ट बोलस	(भूख बढ़ाने के लिए)	24-27
एनपीसी फोर्ट बोलस	(दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न को दूर करने के लिए)	28
मिनलाइस वेट सोप	(बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाने के लिए)	29
डाइजामैक्स पॉउडर	(शक्तिशाली सुक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार)	30-33
बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं में गर्भ ठहराने का तरीका		34-35
एनरबूस्ट पॉउडर	(पशुओं में ऊर्जा की कमी का एक समाधान)	36-40
जस्टाप्रोजन पॉउडर	(सुरक्षित गर्भकाल के लिए)	41-43
मिनवर्म	(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)	44-45
मिनफ्लुक-डीएस	(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)	46-47
फेन्मैक्स बोलस	(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)	48
न्यूक्लियोटोन पॉउडर	(नई कोशिकाओं के निर्माण के लिए)	49-51
पुबरएड पॉउडर	(बछड़ा/बछिया को जल्दी तैयार करने के लिए)	52-55
इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस	(हीट में लाने के लिए)	56-58
टोक्साउट पॉउडर	(दाना-चारा में उपस्थित फफूंद को बाहर निकालने के लिए)	59-61
पशुओं को नए दूध करवाने के तुरन्त बाद ठण्डा टीका नहीं लगवाना चाहिए		62-63
इम्पैक्योर पॉउडर	(कब्ज व गोबर के बन्ध को खोलने के लिए)	64-65
माइक्रोटोन	(पशुओं के छोटे बच्चों की मृत्यु दर समाप्त करने के लिए)	66-67
सिमलेज हर्ब्स बोलस	(दूध उतारने के लिए)	68-71
दूध का रिकार्ड रखने का तरीका		72
गोल्डफोस ग्रेन्यूलस	(प्रोटिन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट)	73-75
पशुओं के छोटे बच्चों की देखभाल करने का तरीका		76-77
मुर्राह भैंस		78
साहिवाल गाय		79
पशु पालन में रखी जाने वाली सावधानियाँ		80

प्रस्तावना

जब हमारी कम्पनी के अधिकारी सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में गए और पशु पालकों से वार्तालाप की तो सभी पशुपालक मित्रों का कहना था कि किसी भी कम्पनी की कोई ऐसी पुस्तिका नहीं है जो सरल भाषा में हो तथा जिसे पढ़कर हमें पशुओं की समस्याओं के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान हो जाए। पाकिस्तान सीमा से लगते राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के पशुपालकों से लेकर नेपाल सीमा से लगते उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के पशुपालकों को एक ऐसी पुस्तिका की तलाश थी जिसे पढ़कर उन्हें पशुओं की समस्याओं के बारे में कुछ सामान्य ज्ञान हो जाए।

आपकी कम्पनी ने पशुपालकों की इस जरूरत को समझा और नतीजा इस पुस्तिका के रुप में आपके सामने है। हम अपने प्रयास में कितने सफल रहे, इसकी जानकारी देना मत भूलना क्योंकि हर प्रयास में कुछ न कुछ सुधार की गुंजाइश रहती ही है। जैसा कि दुनिया का सबसे तेज धावक बनने के लिए बोल्ट ने किया। 100 और 200 मीटर की रेस को विश्व रिकार्ड के साथ जीतने के बाद बोल्ट ने कहा कि मैंने हर बार अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने का प्रयास किया और अगली बार उसमें और अधिक सुधार का प्रयास किया। इसी प्रकार इस प्रयास में सुधार हेतु हमें आपके सुझावों का इस नम्बर पर इंतजार रहेगा। (Even the best can be amended.)

फरवरी 21, 2020

डॉ० बिजेन्द्र कुमार
(पीएच. डी.)
09416052820 (मो.)

पशुओं में नस्ल सुधार क्यों और कैसे ?

पशुपालक मित्रों, जीवित प्राणियों में नस्ल का बहुत महत्त्व होता है। प्रत्येक नस्ल की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। जो केवल उसी नस्ल में देखने को मिलती हैं, अन्य किसी नस्ल में नहीं।

नस्ल क्या होती है?

ऐसे जानवरों का समूह जिनके पैदा होने का स्थान एक होता है तथा जिनमें अपने कुछ विशेष गुण होते हैं जो उन्हें उसी जाति के जानवरों से अलग करते हैं, नस्ल कहलाती है ।

उदाहरण के तौर पर मुर्राह नस्ल की भैंस एक ब्याँत में 4,500 लीटर तक दूध देती है जबकि अन्य नस्ल की भैंसें जैसे नीली-रावी, कुण्डी, भदावरी, तराई, महसाना, सुरती जाफराबादी, टोडा और नागपुरी आदि इतना दूध नहीं देतीं । इसी प्रकार अमेरिकन नस्ल की गाय (जरसी, होलसटिन-फ्रीजियन) ज्यादा दूध देती हैं जबकि हमारी साहीवाल, गिर, रेड-सिन्धी, थारपारकर, डिओनी, राठी, खिलाड़ी या नागौरी नस्ल की गाय कम दूध देती हैं।

पशु प्रजनन विज्ञान में एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा हम कम दूध देने वाली नस्ल की भैंस को मुर्राह नस्ल की भैंस बना सकते हैं। इस विधि को क्रोस ब्रीडिंग कहते हैं। अर्थात् जब एक ही जीव की दो नस्लों का आपस में मिलान करवाते हैं तो इसे क्रोस ब्रिडिंग कहते हैं। इसमें कम अच्छी नस्ल की मादा को अच्छी नस्ल के नर से मिलवाते हैं। अच्छी नस्ल के साण्ड के वीर्य को हम कृत्रिम गर्भाधान के द्वारा भी प्रयोग कर सकते हैं।

कृत्रिम गर्भाधान क्या होता है?

यह वह विधि है जिसमें मादा पशु को साण्ड से न मिलवाकर कृत्रिम तरीके से मादा पशु की बच्चादानी में बीज रखते हैं।

कृत्रिम गर्भाधान से होने वाले लाभ :

- कम - अच्छी नस्ल को आसानी से अच्छी नस्ल बनाया जा सकता है।
- गाय को जब साण्ड से नए दूध करवाते हैं तो साण्ड वजाइना में सीमन छोड़ता है जबकि कृत्रिम गर्भाधान में हम सीमन बच्चेदानी के मुहाने पर छोडते हैं। इस प्रकार सीमन को वजाइना से लेकर बच्चेदानी के मुहाने तक की यात्रा नहीं करनी पड़ती, अतः गर्भधारण की सम्भावना बढ़ जाती है ।

क्रोस ब्रीडिंग द्वारा कम अच्छी नस्ल की भैंस को अच्छी नस्ल की भैंस में कैसे तब्दील कर सकते हैं?

		कम अच्छी नस्ल की भैंस (उदाहरण के लिए नागपुरी भैंस)	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(50 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ1	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(75 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ2	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(87.5 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ3	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(93.75 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ4	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(96.875 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ5	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(98.4375 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ6	X	मुर्राह झोटा
			↓	
(99.22 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ7	X	मुर्राह झोटा

इस प्रकार उपरोक्त सूची से आपको ज्ञात हो गया होगा कि सातवीं पीढ़ी में नागपुरी भैंस 99.22 प्रतिशत मुर्राह बन जाती है।

पशुओं में गर्भावस्था का समय

पशु का नाम	गर्भावस्था का समय
बिल्ली / कुत्तिया	2 महीने ± 2 दिन
भेड़-बकरी	5 महीने ± 5 दिन
गाय	9 महीने ± 9 दिन
भैंस	10 महीने ± 10 दिन
घोड़ी	11 महीने ± 11 दिन
ऊँटनी	14 महीने ± 14 दिन
हथिनी	24 महीने ± 24 दिन
सुअरी	3 महीने, तीन सप्ताह ± 3 दिन

पशुओं से हर साल एक बच्चा क्यों और कैसे ?

पशुपालक मित्रों, एक अच्छी गाय / भैंस वह है जो हर साल एक बच्चा दे। पशु प्रजनन वैज्ञानिक गाय / भैंस के एक ब्याँत को 305 दिन का मानते हैं। इसके पीछे उनका तर्क है कि 5 महीने 30 दिन के और 5 महीने 31 दिन के। इस प्रकार दस महीनों के 305 दिन बन जाते हैं। गाय का गर्भकाल 9 महीने ± 9 दिन और भैंस का गर्भकाल 10 महीने ± 10 दिन होता है। अर्थात् गाय का गर्भकाल भैंस से एक महीना कम होता है। अगर हम भैंस से हर साल एक बच्चा लेने में कामयाब हो जाते है तो गाय से तो आसानी से कामयाब हो सकते हैं क्योंकि गाय का गर्भकाल भैंस से एक महीना कम होता है।

उदाहरण के तौर पर मान लो कि आपकी भैंस पहली जनवरी को ब्याई है तो आने वाले एक साल में उसका व्यवहार इस प्रकार होना चाहिए :

सूची क्रमांक 1.

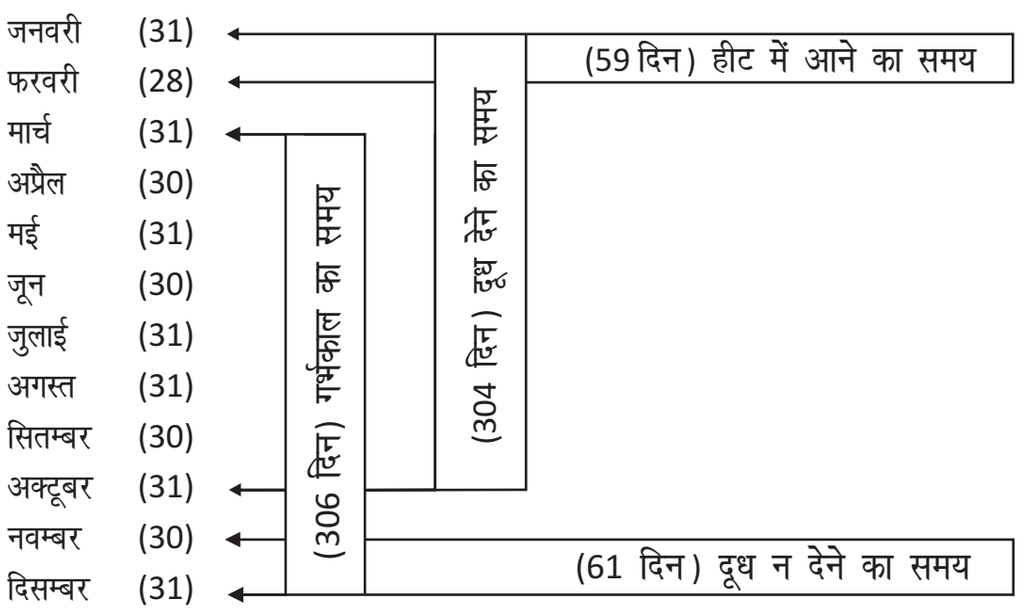

- एक जनवरी से 31 अक्टूबर (304 दिन) = दूध देने का समय
- एक जनवरी से 28 फरवरी (59 दिन) = हीट में आने का समय
- एक मार्च से 31 दिसम्बर (306 दिन) = गर्भकाल का समय
- एक नवम्बर से 31 दिसम्बर (61 दिन) = दूध न देने का समय

उदाहरण के तौर पर मान लो कि आपकी गाय पहली जनवरी को ब्याई है तो आने वाले एक साल में उसका व्यवहार इस प्रकार होना चाहिए :

सूची क्रमांक 2.

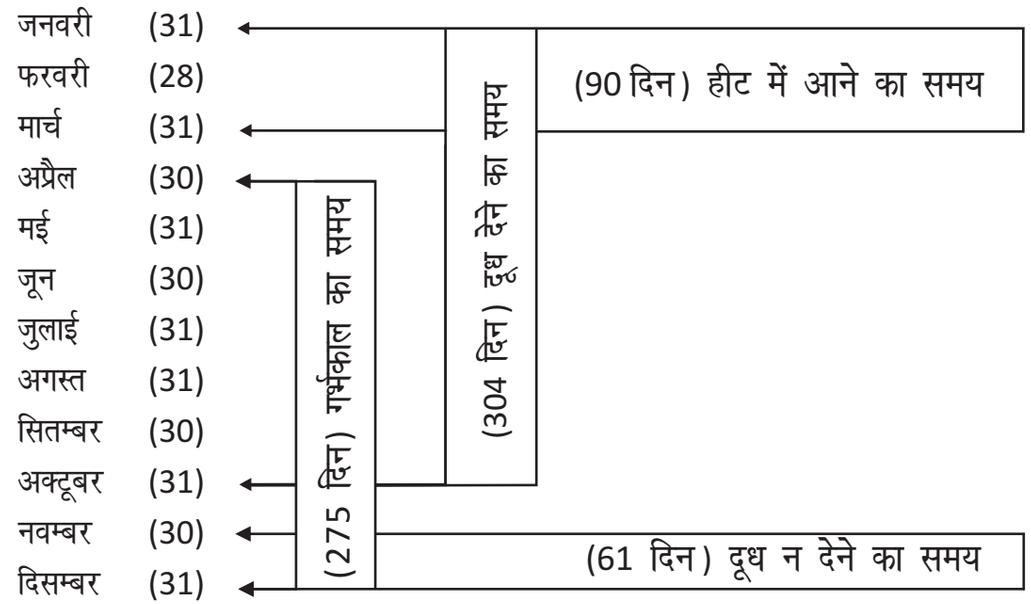

- एक जनवरी से 31 अक्टूबर (304 दिन) = दूध देने का समय
- एक जनवरी से 31 मार्च (90 दिन) = हीट में आने का समय
- एक अप्रैल से 31 दिसम्बर (275 दिन) = गर्भकाल का समय
- एक नवम्बर से 31 दिसम्बर (61 दिन) = दूध न देने का समय

देहात में पशुओं में बांझपन की एक बहुत बड़ी समस्या है । ज्यादातर पशु ब्याने के 6-7 महीने बाद ही हीट में आते हैं और हमारे पशुपालक इसकी परवाह भी नहीं करते हैं । मित्रों, अगर ब्याने के बाद 2 महीने के अन्दर-अन्दर आपकी भैंस हीट में नहीं आती है तो आपको उस भैंस से काफी नुकसान हो रहा है। और आपको इसका एहसास भी नहीं होता क्योंकि आपने कभी गहराई से व्यापारी की तरह हिसाब लगाया ही नहीं । आमतौर पर हम एक भैंस का दूध 5-6 ब्याँत तो पीते ही है। अगर कोई भैंस हर साल एक बच्चा देती है तो हमें उस भैंस से पाँच साल में पाँच बच्चे व पूरे पाँच ब्याँत का दूध मिलता है । जो भैंस हर साल एक बच्चा देती है, सामान्यतः उसका दूध न देने का समय (DRY PERIOD, ड्राई पीरियड) दो महीने का होता है । लेकिन जो भैंस ब्याने के बाद समय से हीट में न आकर देरी से हीट में आती है तो उसका ड्राई पीरियड भी ज्यादा होता है । अर्थात् जो भैंस चार महीने देरी से हीट में आती है तो उसका ड्राई पीरियड दो महीने का न होकर ज्यादा होगा । अगर एक नम्बर सूची के अनुसार हिसाब लगाये तो उसका ड्राई पीरियड चार महीने का होगा । अगर एक भैंस चार महीने देरी से हीट में आती है तो आने वाले 5 साल में उसका व्यवहार इस प्रकार होगा :

जनवरी पहला बच्चा	जनवरी	जनवरी	जनवरी	जनवरी चौथा बच्चा
फरवरी	फरवरी	फरवरी	फरवरी	फरवरी
मार्च	मार्च	मार्च	मार्च	मार्च
अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल
मई	मई दूसरा बच्चा	मई	मई	मई
जून	जून	जून	जून	जून
जुलाई	जुलाई	जुलाई	जुलाई	जुलाई
अगस्त	अगस्त	अगस्त	अगस्त	अगस्त
सितम्बर	सितम्बर	सितम्बर तीसरा बच्चा	सितम्बर	सितम्बर
अक्टूबर	अक्टूबर	अक्टूबर	अक्टूबर	अक्टूबर
नवम्बर	नवम्बर	नवम्बर	नवम्बर	नवम्बर
दिसम्बर	दिसम्बर	दिसम्बर	दिसम्बर	दिसम्बर

अर्थात् अगर एक भैंस ब्याने के बाद 4 महीने से देरी में हीट में आती है तो आपको उससे पाँच साल में पाँच बच्चे न मिलकर चार बच्चे ही मिलेगें । इस प्रकार चार महीने देरी से हीट में आने के कारण आपको एक भैंस से निम्नलिखित नुकसान होते हैं :

1) एक बच्चा कम मिलता है : इस नुकसान का कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता क्योंकि बच्चे तो बेशकीमती होते हैं । एक कटिया 26 लाख की भी बिक सकती है तथा एक झोटा 1 करोड़ का भी बिक सकता है ।

2) एक ब्याँत का दूध कम मिलता है : एक भैंस सामान्यतः एक ब्याँत में 3500 लीटर दूध तो देती ही है। आजकल दूध की कीमत 50 रुपये प्रति लीटर है। इस प्रकार हमें एक ब्याँत का दूध न मिलने के कारण 3500 x 50 = 1,75,000 रुपये का नुकसान होता है ।

3) ड्राई पीरियड 8 महीने ज्यादा होता है : अगर एक भैंस एक ब्याँत में 3500 लीटर दूध देती है तो वह आठ महीने में 2800 लीटर दूध देगी । इस प्रकार ज्यादा ड्राई पीरियड होने से 2800 x 50 = 1,40,000 रुपये का नुकसान होता है ।

इस प्रकार अगर एक भैंस समय से हीट में न आकर अगर मात्र चार महीने देरी से ही हीट में आती है तो हमें पाँच साल में एक बच्चा कम व 1,75,000 + 1,40,000 = 3,15,000 रुपये का नुकसान होता है । अब बात आती है कि इस नुकसान से कैसे बचा जा सकता है ? इसके लिए हमको कोई विशेष प्रयास नहीं करने हैं । आपको केवल अपने पशुओं को 30-35 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड रोज़ाना खिलाना है और इस नुकसान से छुटकारा पाना है । अब बात आती है कि 35 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड खिलाने से आपका प्रति पशु कितना खर्चा बढ़ जाता है ? बायोबीऑन गोल्ड 20 किलोग्राम की कीमत 3554 रुपये है ।

20,000 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड की कीमत = 3554 रुपये

1 ग्राम ..... = $\frac{3554}{20,000}$ रुपये

35 ग्राम ..... = $\frac{3554 \times 35}{20,000}$ रुपये

= 6.22 रुपये

बायोबीऑन गोल्ड का एक भैंस का एक दिन का खर्चा = 6.22 रुपये

बायोबीऑन गोल्ड का एक भैंस का 365 दिन का खर्चा = 6.22 x 365 = 2,270 रुपये

= 2,270 x 5 = 11,350 रुपये

इस प्रकार बायोबीऑन गोल्ड का एक भैंस का 5 साल का खर्चा 11,350 रुपये है और फायदा 3,15,000 रुपये व एक बच्चा ज्यादा मिलने का है।

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर

(भारत का सबसे बढ़िया चिलेटिड खनिज मिश्रण)

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर वैज्ञानिकों द्वारा की गई दो खोजों के आधार पर बना है :

1) केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार के वैज्ञानिकों की टीम ने डॉक्टर दलीप लाल के नेतृत्व में मिट्टी की जाँच करके खनिज मिश्रण बनाने का एक शुद्ध (खांटी) भारतीय फार्मूला तैयार किया। बायोबीऑन गोल्ड डॉक्टर दलीप लाल की टीम द्वारा बताये गये उसी फार्मूला के आधार पर ही बना है।

2) राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के वैज्ञानिक डॉक्टर टी. प्रसाद ने खोज के दौरान पाया कि चिलेटिड अवस्था में जिंक, मैंगनीज और कॉपर खिलाने से पशुओं में ज्यादा दूध बढ़ता है, बांझपन व बार-बार गाभिन होने की समस्या दूर होती है तथा छोटे बच्चों में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। जबकि साधारण अवस्था में जिंक, मैंगनीज और कॉपर खिलाने के कारण पशुपालकों को ज्यादा खर्चा उठा कर भी कम लाभ मिलता है।

बायोबीऑन गोल्ड के प्रत्येक 1 कि. 200 ग्राम में मिलता है :

डाइकैल्शियम फॉस्फेट	928 ग्राम
मैग्नीशियम कार्बोनेट	40 ग्राम
जिंक विद अमाइनो एसिड चिलेटस	10 ग्राम
मैंगनीज विद अमाइनो एसिड चिलेटस	4 ग्राम
कॉपर विद अमाइनो एसिड की चिलेटस	3 ग्राम
पोटाशियम आयोडाइड	1 ग्राम
मनन ओलिगोस्केराइड	50 ग्राम
बेसिलस सटिलिस	20 ग्राम

जब वैज्ञानिकों ने विभिन्न गाँवों में बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर पशुओं को खिलाया तो इसके बहुत ही बढ़िया परिणाम सामने आए :

- 70 प्रतिशत भैंसे व झोटियाँ हीट में आ गईं।
- छोटे पशुओं में जल्दी वजन बढ़ा।
- दुधारू पशुओं में अच्छा दूध बढ़ा।

इस प्रकार बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर दूध बढ़ाने के साथ-साथ पशुओं को गर्मी में भी लाता है।

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर की खूबियाँ इस प्रकार हैं :

1) बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर पशु को डाले गए दाने-चारे को अच्छी प्रकार से हज़म करता है

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर में *बेसिलस सिटिलिस* नामक बैक्टीरिया डाला गया है। इसके एक ग्राम में 50 लाख बैक्टीरिया के गुच्छे (ढाणियाँ) बनाने की क्षमता होती है अतः आप अपने पशुओं को जो भी दाना-चारा डालेंगे तो यह बैक्टीरिया उसे आसानी से हज़म करने में पशु की मदद करता है।

2) बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर दाने-चारे में उपस्थित बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं को बाहर निकालता है

हम अपने पशुओं के लिए सूखा चारा बहुत ज्यादा मात्रा में (गेहूँ का तूड़ा या ज्वार-बाजरा के गद्दे) इकट्ठा रखते हैं ताकि हमें बार-बार तंग न होना पड़े। कोई भी वस्तु जब काफी समय तक स्टोर की जाती है तो उसमें बीमारी फैलाने वाले जीवाणु लग जाते हैं। जैसे गेहूँ में सुरसी, चने में घुन और सूखे चारे में फफूँदी। आम का अचार तो हर घर में मिल जाता है। अगर हम अचार को जल्दी-जल्दी न सम्भालें तो उस पर मटमैली रंग की परत जम जाती है। यह मटमैली रंग की परत नुकसान पहुँचाने वाली फफूँदी होती है। साल भर का स्टोर किया हुआ गेहूँ का तूड़ा जब खत्म होने को होता है तो वह पीला पड़ जाता है। यह पीलापन फफूँदी के कारण होता है। बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर में मनन ओलिगोसक्रेराइड डाला गया मनन है। ओलिगोसक्रेराइड बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं के ऊपर चिपक कर उन्हें गोबर के रास्ते बाहर निकाल देता है जिसके कारण बीमारी फैलाने वाले जीवाणु अपना विषैलापन नहीं छोड़ पाते और परिणाम स्वरूप पशु को दस्त नहीं लगते तथा दूध उत्पादन बढ़ जाता है।

3) चिलेसन क्या होती है ?

हम जब भी कोई खनिज तत्त्व साधारण अवस्था में खिलाते हैं तो वह पशु के पेट में जाकर किसी अन्य खनिज तत्त्व के साथ क्रिया करके गोबर के रास्ते बाहर निकल जाता है। हमने खनिज तत्त्व खिलाया तो इसलिए था कि वह खून में घुलकर पशु का उत्पादन बढ़ाएगा लेकिन उत्पादन बढ़ाना तो दूर वह गोबर के रास्ते बाहर निकल आता है। इस प्रकार खनिज तत्त्व पर हमारा खर्चा बेकार गया। खनिज तत्त्वों की पशु के पेट में जाकर आपस में क्रिया न हो इसके लिए खनिज तत्त्वों की आयोनिक अवस्था पर अमाइनो एसिड की परत चढ़ा दी जाती है ताकि जब खून में अमाइनो एसिड घुले तो उसके साथ वह खनिज तत्त्व भी घुल जाए जिससे पशु का उत्पादन बढ़े और हमारे पैसों की पूरी वसूली हो जाए। बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर में जिंक, मैंगनीज और कॉपर को अमाइनो एसिड से चिलेटस किया गया है।

4) डीसीपी कैल्शियम

दुनिया में कैल्शियम का सबसे अच्छा माध्यम डीसीपी है। इस प्रकार बायोबीऑन गोल्ड में दुनिया का सबसे अच्छा कैल्शियम डाला गया है।

5) कैल्शियम - फास्फोरस की उपयुक्त मात्रा

एक लीटर दूध में 1.1 ग्राम कैल्शियम होता है। दूध में कैल्शियम का आधा फॉस्फोरस भी होता है। इस प्रकार एक लीटर दूध में 1.1/2 = 0.55 ग्राम फॉस्फोरस होता है। अतः एक लीटर दूध में 1.1 + 0.55 = 1.65 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस होता है । 20 लीटर दूध देने वाले पशु के शरीर से दूध के जरिये कैल्शियम-फॉस्फोरस निकलता है = 1.65 x 20 = 33 ग्राम

बायोबीऑन गोल्ड की खुराक है = 50 ग्राम

50 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड में कैल्शियम-फॉस्फोरस मिलता है = $\frac{928 \times 50}{1200}$ = 38.67 ग्राम

इस प्रकार 20 लीटर दूध देने वाले पशु को 33 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस चाहिए जबकि बायोबीऑन गोल्ड की 50 ग्राम खुराक में 38.67 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस मिलता है ।

लिक्विड कैल्शियम के प्रत्येक 100 एम.एल. में होता है :

कैल्शियम	1,650 मिली ग्राम	विटामिन डी-3	8,000 आई.यू.
फॉस्फोरस	825 मिली ग्राम	विटामिन बी-12	100 माइक्रोग्राम

अगर इसे 5 लीटर में निकालना हो तो आप उपरोक्त को 50 से गुणा कर दीजिए । इस प्रकार आपको पाँच लीटर कैल्शियम के पूरे जार में मिलता है :

कैल्शियम	82,500 मिली ग्राम	विटामिन डी-3	4,00,000 आई.यू.
फॉस्फोरस	41,250 मिली ग्राम	विटामिन बी-12	5000 माइक्रो ग्राम

पाँच लीटर लिक्विड कैल्शियम = 82,500 + 41,250
= 123.75 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस

बायोबीऑन गोल्ड = 928 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस

बायोबीऑन गोल्ड का एक पैकेट = $\frac{928}{123.75}$ = 7.49 लिक्विड कैल्शियम के जार

निम्नलिखित परिस्थितियों में बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए :

- बांझपन दूर करने के लिए ।
- जब पशु खुलकर हीट में ना आए ।
- जब पशु हीट में आने के बाद पुकारता न हो ।
- जब पशु बार-बार गाभिन होता हो ।
- जब पशु के पेशाब में खुन आने लग जाए तो सहायक इलाज के रूप में ।

खुराक :

बछड़ा/बछिया के लिए : 30 से 40 ग्राम रोज़ाना

बड़े पशुओं के लिए : 50 से 60 ग्राम रोजाना

300 किलोग्राम फीड में 1.2 किलोग्राम बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर मिलाना है ।

उपलब्धता : 1 किलो 200 ग्राम, 5 किलोग्राम, 5 किलोग्राम, 10 किलोग्राम व 20 किलोग्राम

ज्यादा दूध व ज्यादा बच्चे, बायोबीऑन गोल्ड के वायदे सच्चे

सिमलेज बोलस

(कैल्शियम की पूर्ति करके दूध बढ़ाने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पशुओं में कैल्शियम का बहुत महत्त्व होता है। हर एक लीटर दूध मे 1.1 ग्राम से 1.2 ग्राम कैल्शियम होता है। अर्थात ज्यादा दूध देने वाले पशु को ज्यादा कैल्शियम की आवश्यकता होती है। पशुओं मे कैल्शियम की पूर्ति के लिए सिमलेज बोलस का इस्तेमाल करें।

सिमलेज की प्रत्येक बोलस में है :

ट्राइबेसिक कैल्शियम फास्फेट	4.8 ग्राम
विटामिन डी-3	10,000 आई.यू.
मैग्नीशियम	20 मिली ग्राम
विटामिन बी-12	100 माइक्रो ग्राम
विटामिन ई	25 मिली ग्राम
विटामिन एच (बॉयोटिन)	100 माइक्रो ग्राम
एल. लाइसिन	125 मिली ग्राम
लेप्टाडिनिया रेटीकूलेटा (जीवन्ती)	350 मिली ग्राम
शतावरी	2500 मिली ग्राम

कुछ पशुपालक, पशुओं में कैल्शियम की पूर्ति के लिए लिक्विड कैल्शियम भी पिलाते हैं। लिक्विड कैल्शियम के प्रत्येक 100 एम.एल. में होता है :

कैल्शियम	1,650 मिली ग्राम
फॉस्फोरस	825 मिली ग्राम
विटामिन डी-3	8,000 आई.यू.
विटामिन बी-12	100 माइक्रोग्राम

अगर इसे 5 लीटर में निकालना हो तो आप उपरोक्त को 50 से गुणा कर दीजिए। इस प्रकार आपको पाँच लीटर कैल्शियम के पूरे जार में मिलता है :

कैल्शियम	82,500 मिली ग्राम
फॉस्फोरस	41,250 मिली ग्राम
विटामिन डी-3	4,00,000 आई.यू.
विटामिन बी-12	5000 माइक्रो ग्राम

सिमलेज की एक बोलस में 4.8 ग्राम ट्राईबेसिक कैल्शियम फास्फेट मिलता है और सिमलेज के एक डिब्बे में 20 गोलियाँ आती हैं। इस प्रकार आपको सिमलेज के पूरे डिब्बे में 96,000 मि.ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है।

5 लीटर लिक्विड कैल्शियम में 1,23,750 मि. ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है । इस प्रकार सिमलेज बोलस का पूरा डिब्बा लगभग 4.00 लीटर लिक्विड कैल्शियम के बराबर है। मज़ेदार बात यह है कि 5 लीटर कैल्शियम का जार आपको 100 रुपये से लेकर 800 रुपये तक मिलता है यानि कि कैल्शियम का कोई निश्चित रेट ही नहीं है। यह आप लोगों के साथ खिलवाड़ हो रहा है।

लिक्विड कैल्शियम केवल मात्र दूध बढ़ाती है । जबकि सिमलेज बोलस दूध तो बढ़ाती ही है इसके साथ-साथ यह पशु के पावस को, पशु की दूध धारण करने की क्षमता को, दूध की गुणवत्ता को बढ़ाने के अलावा दूध कोशिकाओं की मुरम्मत भी करती है।

कई बार आप कैल्शियम में विटामिन की छोटी शीशी भी मिलाते हैं। विटामिन की छोटी शीशी के प्रत्येक एम.एल. में आपको मिलता है :

विटामिन ए	12,000 आई.यू.
विटामिन डी-3	6,000 आई.यू.
विटामिन ई	48 मि. ग्राम
विटामिन बी-12	20 माइक्रोग्राम

सिमलेज बोलस में आपको विटामिन ए को छोड़कर बाकि तीन विटामिन मिल जाते हैं । आप पाँच लीटर कैल्शियम के जार में 300 एम. एल. विटामिन की शीशी मिलाते हैं जिसकी कीमत आप 350 रुपये अदा करते हैं। इस प्रकार आप 800 रुपये कैल्शियम पर और 350 रुपये विटामिन पर अर्थात् कुल 1150 रुपये खर्च करते हैं जबकि सिमलेज बोलस पर आपको केवल 340 रुपये खर्च करने पड़ेंगे।

हमारा काम आपको जागृत करना है। जिस लाभ के लिए आप 1150 रुपये खर्च करते हैं वही लाभ आपको 340 रुपये में उपलब्ध है ।

सिमलेज बोलस	लिक्विड कैल्शियम
● सिमलेज बोलस खिलाने के अनेक फायदे हैं।	● लिक्विड कैल्शियम पिलाने के कुछ ही फायदे हैं।
● सिमलेज बोलस के एक डिब्बे में आपको 96 ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है जो लगभग 4.00 लीटर लिक्विड कैल्शियम के बराबर है।	● 5 लीटर कैल्शियम में आपको 123.75 ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है।
● विटामिन मिलाने की आवश्यकता नहीं है।	● विटामिन की छोटी शीशी मिलानी पड़ती है।
● इसकी कीमत मात्र 340 रुपये निश्चित है।	● एक तो इसकी कोई निश्चित कीमत नहीं है, दूसरे कैल्शियम और विटामिन मिलाकर आपको लगभग 1150 रुपये देने पड़ते हैं।
● बोलस में होने के कारण pH का कोई चक्कर नहीं है।	● इसकी pH अम्लीय होती है अर्थात् सामान्य से कम । सामान्य से कम pH में जब विटामिन मिलाते हैं तो थोड़े ही समय बाद विटामिन नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार आपके विटामिन मिलाने के पैसे बेकार चले जाते हैं ।
● पशु को खिलाना आसान है।	● पशु को खिलाना थोड़ा मुश्किल है।

दूध बढ़ाने के साथ-साथ सिमलेज बोलस के और भी फायदें हैं :

(क) सिमलेज बोलस दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाती है ।

(ख) सिमलेज बोलस दूध की गुणवत्ता को बढ़ाती है।

(ग) सिमलेज बोलस दूध कोशिकाओं की मुरम्मत करती है।

सिमलेज बोलस दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाती है

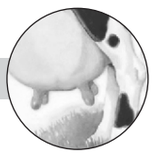

सिमलेज बोलस में उपस्थित विटामिन एच लेवटी की दूध कोशिकाओं में फैलने और सिकुड़ने की क्षमता प्रदान करके लेवटी में दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाती है।

सिमलेज बोलस दूध की गुणवत्ता को बढ़ाती है

सिमलेज बोलस में उपस्थित विटामिन ई, एल-लाइसिन व विटामिन बी-12 दूध की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं अर्थात् दूध को गाढ़ा बनाने में मदद करते हैं। जब पशु को थनैला रोग हो जाता है तो दूध में मरी हुई कोशिकाएं आने लगती हैं जिससे दूध का स्वाद बिगड़ जाता है। सिमलेज बोलस थनैला रोग के दौरान दूध में मरी हुई कोशिकाएं आने से रोककर दूध की गुणवत्ता को बनाये रखती है ।

सिमलेज बोलस दूध कोशिकाओं की मुरम्मत करती है

जब हम सुबह-शाम दूध निकालते हैं तो थन की कुछ कोशिकाओं को नुकसान होता है क्योंकि देहात में मुट्ठी से दूध न निकालकर थन पर अँगूठा लगाकर दूध निकाला जाता है। यह नुकसान ताजा ब्याए पशु में ज्यादा होता है । थन की इनकोशिकाओं के नुकसान को बचाने के लिए सिमलेज बोलस में मैग्नीशियम डाला गया है। मैग्नीशियम टिशू रिपेयर का काम करता है अर्थात् दूध कोशिकाओं की मुरम्मत करके दूध दूहने से कोशिकाओं के होने वाले नुकसान से बचाता है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में केवल सिमलेज बोलस ही खिलाएँ :

- जब पशु को थनैला रोग हो गया हो ।
- जब पशु बच्चा गिरा दे ।
- जब पशु अनियमित रूप (खड़ मारता हो) से दूध दे ।
- जब पशु पिछले ब्याँत से कम दूध देता हो ।
- जब मौसम में बदलाव आ रहा हो ।
- जब पशु दूध चढ़ाता (डोकले करता) हो ।
- जब पशु ब्याने के तुरन्त बाद दूध न दे ।

खुराक :

एक बोलस सुबह एक शाम दस दिनों तक

उपलब्धता : एक डिब्बे में 20 बोलस

सिमलेज बोलस : कैल्शियम की पूर्ति करके दूध बढ़ाने के लिए ।

अडर-एच

(अडर की सम्पूर्ण देखभाल के लिए)

पशुपालक मित्रो, थनैला रोग पर दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने बहुत काम किया है । शोध के पश्चात् वैज्ञानिकों का मत है कि

(1) जब पशुओं के शरीर में ब्याने से दो महीने पहले और ब्याने के दो महीने बाद तक विटामिन ई की कमी हो जाती है तो थनैला रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है ।

(2) विटामिन सी थनैला रोग मे सूजन को कम करता है ।

थनैला रोग होने पर हमारे बड़े-बूढ़े नीम्बू का रस व खाण्ड देते थे । नीम्बू के रस में एस्कोरबिक एसिड होता है । एस्कोरबिक एसिड से ही हमें विटामिन सी मिलता है । इस प्रकार हमारे बड़े-बूडढों व वैज्ञानिकों के विचार आपस में मिलते हैं । अडर-एच मे विटामिन ई व सी दोनों ही मिलते हैं । अतः अगर ब्याने से दो महीने पहले आप पशुओं को अडर-एच पिलाएँगे तो थनैला रोग होने कि संभावना समाप्त हो जाएगी क्योंकि अडर-एच विटामिन ई की कमी को नहीं होने देगा । इस प्रकार अडर-एच थनैला रोग में बहुत ही उपयोगी हैं ।

अडर-एच के प्रत्येक एम.एल. में मिलता है :

विटामिन ए	20,000 आई.यू.	विटामिन डी-3	10,000 आई.यू.
विटामिन सी	50 मि.ग्राम	विटामिन ई	50 मि.ग्राम
विटामिन एच	12.5 माइक्रो ग्राम		

विटामिन एच अडर की दूध ग्रंथियो में फैलने और सिकुड़ने की क्षमता प्रदान करके अडर की दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है । उदाहरण के तौर पर आप एक गुब्बारा लें । उसमें थोड़ी सी हवा भर कर निकाल दें । हवा निकालने के बाद अगर आप उस गुब्बारे में फिर से हवा भरेंगे तो आप पाएगें कि जहाँ तक पहले हवा भरी गई थी वहाँ तक तो गुब्बारा आसानी से फूल जाता है उसके बाद हवा भरने में थोड़ा जोर लगाना पड़ता है । इस गुब्बारें की हवा फिर से निकालकर देखेगें तो आप पाऐगे कि जहाँ तक दुबारा हवा भरी गई थी वहाँ तक गुब्बारा लचीला हो गया है और वहाँ तक हवा फिर से आसानी से भरी जा सकती है । इस प्रकार बार-बार हवा भरने व निकालने के कारण गुब्बारें में लचीलापन आ जाता है और गुब्बारें में हवा का दवाब भी बढ़ जाता है । ठीक इसी प्रकार विटामिन एच लेवटी की दूध ग्रंथियो में फैलने और सिकुड़ने की क्षमता प्रदान करके लेवटी की दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है । इस प्रकार अडर एच लेवटी रुपी बर्तन के आकार को बढ़ा देती है ।

थनैला रोग से होने वाले नुकसान :

- थनैला रोग के परिणामस्वरूप आपको दूध का बहुत ज्यादा नुकसान होता है।
- कई बार थन खत्म हो जाता है या थन सिकुड़ कर छोटा (चढ़ जाता है) हो जाता है।
- थनैला रोग के इलाज पर बहुत अधिक खर्च आता है।

पशुपालक मित्रों, जब भी आपके पशु को थनैला रोग हो जाए तो आप उसे इलाज के साथ-साथ रोजाना 10 एम.एल. अडर-एच अवश्य पिलायें क्योंकि जो इलाज आप करवा रहे हैं, उससे केवल इन्फैक्शन समाप्त होता है। इन्फैक्शन के कारण थन की कोशिकाओं का जो नुकसान हुआ है, उसके लिए आप कुछ नहीं देते। अडर-एच थन की कोशिकाओं की मुरम्मत करता है जिससे थन मरेगा नहीं, चढ़ेगा नहीं और दूध पूरा आएगा। अगर आपने थन मरने से बचा लिया तो समझो पशु की आधी कीमत बचा ली।

जिस पशु का थन पिछले ब्याँत में खत्म हो जाता है उस पशु को अगर गर्भावस्था के आठवें, नौवें और दसवें महीने में 10 एम. एल. अडर-एच हर रोज़ 10 दिनों तक पिलाया जाए तो थन खुलने के 50 प्रतिशत अवसर होते हैं। इसी तरीके से आप असमान (टेढ़ी) लेवटी को भी सीधा कर सकते हैं ।

कई बार पशुपालक मित्रों को लगता है कि पशु के ब्याने का महीना भर रह गया है लेकिन इसकी लेवटी को देखकर लगता ही नहीं कि यह बच्चे को जन्म देने वाली है। इस प्रकार के पशुओं को अगर आप 10 एम.एल. अडर-एच 25 दिन तक रोज़ाना पिलाएँगे तो पशुओं की बड़ी अच्छी लेवटी बन जाएगी क्योंकि अडर-एच दूध कोशिकाओं में लचीलापन लाकर दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है।

पशुपालक मित्रों, जैसा कि आप जानते हैं पशुओं में सबसे ज्यादा दूध तीसरे ब्याँत में होता है। लेकिन अगर आप खारकी (पहली बार ब्याने वाली) झोटी को गर्भावस्था के सातवें, आठवें और नौवें महीने तथा इसी प्रकार दूसरे ब्याँत में ब्याने से पहले 10 एम.एल. अडर-एच पिलाएँगे तो आपका पशु दूसरे ब्याँत में ही सबसे ज्यादा दूध देने लगेगा। इस प्रकार एक पशु से आप लगभग 500 से 1000 लीटर ज्यादा दूध लेने में कामयाब हो जाएँगे।

कई भैसों की त्वचा बड़ी खुरदरी होती है तथा कइयों का रंग थोड़ा कम काला (चामरा) होता है। इस प्रकार के पशुओं को अडर-एच देने से त्वचा एकदम मुलायम और रंग एकदम काला स्याह हो जाता है ।

ज्यादा दूध देने वाले पशु जब ब्याने के नजदीक होते हैं, तो उनके थनों से दूध अपने आप टपकने लगता है क्योंकि दूध के भार के कारण थन की स्फिंकटर मसल ढीली हो जाती है जिससे पशुओं का दूध टपकना शुरु हो जाता है । अडर-एच स्फिंकटर मसल को मजबूती प्रदान करके दूध के टपकने को रोकती है। अतः दूध टपकने वाले पशुओं को आप 10 एम.एल. अडर-एच 10 दिनों तक पिलाएँ ।

कई बार पशुओं के सींग भुरने लगते हैं और खुरों में दरारें पड़ने लगती हैं। ऐसे पशुओं को भी आप अडर-एच पिलायें ताकि सींगो का भुरना तथा खुरों का चटकना बन्द हो जाए।

डेयरी में जो साण्ड/झोटा गर्भाधान के लिए रखें जाते हैं उनकी गाय/ भैंस खाली रहने लगती हैं क्योंकि लगातार गर्भाधान के कारण उनके वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या कम हो जाती है । अतः गर्भाधान करने वाले साण्ड/झोटा को अडर-एच अवश्य पिलायें ताकि उनके द्वारा गर्भाधान की गई गाय/भैंस खाली न रहें क्योंकि अडर-एच शुक्राणुओं की संख्या को बढ़ाता है ।

खुराक : 10 एम.एल. रोजाना

उपलब्धता : 100 एम.एल., 250 एम.एल., 500 एम.एल., 1 लीटर तथा 2 लीटर

अडर-एच : लेवटी की दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाने के लिए

होली के आस-पास पशुओं को नए दूध करवाने का तरीका

हर पशुपालक चाहता है कि होली से एक महीना पहले या होली के एक महीना बाद उसका पशु नए दूध हो जाए, ताकि उसका पशु अगले साल पूरी गर्मी दूध दे। गर्मियों के मौसम में दूध की कमी महसूस की जाती है। अतः गर्मी शुरू होने से पहले अगर कोई पशु ब्याता है तो व्यापारी लोग उसकी ज्यादा कीमत लगाते हैं ।

होली मार्च के महीने में आती है। मार्च के बाद अप्रैल आता है और अप्रैल के महीने में अच्छी-खासी गर्मी होने लगती है। यही कारण है कि जो पशु मार्च तक हीट में नहीं आते, वे फिर बरसात के मौसम (जुलाई-सितम्बर) में ही हीट में आते हैं। और यही कारण है कि जुलाई से भैंसों का ब्याँत शुरू हो जाता है । क्योंकि जो पशु सितम्बर में हीट में आएगा, उसके ब्याने का समय अगले साल जुलाई ही होगा ।

मार्च-अप्रैल में गर्मी शुरू हो जाती है। इस वजह से पशुओं के हीट में आने का प्रतिशत भी कम हो जाता है। क्योंकि पशुओं की ज्यादातर ऊर्जा रखरखाव में ही चली जाती है। शरीर की अन्य गतिविधियों के लिए ऊर्जा बचती ही नहीं है। अतः नीचे लिखे गए तरीके को वे पशुपालक ही अपनाएँ जिनमें धैर्य का अथाह समुद्र हो और पैसे खर्च करने की क्षमता भी हो। क्योंकि हो सकता है कि पूरा जोर लगाने व पैसे खर्च करने के बाद भी आपका पशु हीट में न आने पाये।

पहला कदम : पशु के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करना ।

सबसे पहले मिनफ्लुक-डीएस की दो गोलियाँ एक साथ देकर अपने पशु के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें। ऐसा करने पर आपका पशु दो दिन पतला गोबर करेगा । अतः पतला गोबर देखकर आपको घबराना नहीं है ।

दूसरा कदम : चौथे दिन से यूट्राविन एक लीटर की चार खुराक बनाकर रोज़ाना 250 एम० एल० पिलायें ।

तीसरा कदम : चार दवाइयों को मिलाकर खिलाना ।

दो किलोग्राम टोक्साउट में 2.4 किलोग्राम बायोबीऑन गोल्ड और एक किलोग्राम गोल्डफोस तथा इस्ट्रोहर्ब-एम की 14 बोलस कूटकर मिलाएँ तथा इस मिश्रण का 250 ग्राम सुबह-शाम आठवें दिन से लेकर अठारहवें दिन तक खिलायें । इसके बाद 10 से 12 दिन तक पशु का हीट में आने का इन्तजार करें ।

यूट्राविन

(जेर गिराने व गर्भाशय की सफ़ाई के लिए)

पशुपालक मित्रो, जब पशु की जेर अटक जाती है तो उसके परिणामस्वरूप आपको निम्नलिखित नुकसान होते हैं :

- पशु दूध से नहीं चलता।
- पशु देरी से गाभिन होता है।
- पशु के गर्भाशय में बीमारी हो जाती है जिससे दूध के साथ-साथ आपको एक बच्चा भी कम मिलता है।

उदाहरण के तौर पर अभी आपका पशु ब्याने के छः महीने बाद गाभिन होता है। अगर यही पशु ब्याने के दो महीने बाद गर्मी में आ जाए तो हमारे चार महीने बच जाते हैं। एक ब्याँत के चार, दूसरे के चार और जोड़ दें तो आठ महीने तथा तीसरे के चार और जोड़ दें तो 12 महीने हो जाते हैं। बारह महीने पशु का एक ब्याँत होता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर पशु ब्याने के छः महीने बाद गर्मी में न आकर दो महीने बाद गाभिन होता है तो हमें उसी पशु से तीन बच्चे न मिलकर चार बच्चे मिलेंगे अर्थात् आपको एक ब्याँत का दूध व एक बच्चा ज़्यादा मिलता है। इस प्रकार दो ब्याँत का अन्तर (इन्टरकाविंग पीरियड) कम करके हमें दोहरा लाभ होता है।

पशुपालक मित्रो, जैसे एक फसल लेने के बाद दूसरी फसल लेने के लिए हम खेत को दोबारा जोतते हैं, दोबारा बीज बोते हैं और दोबारा खाद-पानी लगाते हैं उसी प्रकार पशु से भी एक बच्चा मिलने के बाद दूसरा बच्चा लेने के लिए हमें दोबारा पशु का ख्याल रखना चाहिए। देहात में एक कहावत है कि "100 डांगर 100 के और एक डांगर भी 100 का" । अतः अगर आप कम पशु रखकर उनकी अच्छी देखभाल करते हैं तो आपको लाभ उतना ही होगा जितना आपको ज्यादा पशु और कम देखभाल करने पर होता है ।

पशुपालक मित्रो, आप अपने पशु को ब्याने के तुरन्त बाद यूट्राविन अवश्य पिलायें। इससे पशु को अनेक लाभ होंगे :

- पशु आसानी से जेर डाल देगा।
- पशु के गर्भाशय की सफाई होगी।
- पशु के गर्भाशय को बीमारी नहीं लगेगी।
- पशु पूरे दूध पर आ जाएगा।
- पशु समय से गाभिन होगा।

युट्राविन एक आयुर्वैदिक औषधि है जो बच्चेदानी की सफाई के साथ-साथ दूध भी बढ़ाती है।

यूट्राविन के खास फायदे :

यूट्राविन

- गर्भाशय की मासंपेशियों में संकुचन पैदा करके पशु की आसानी से जेर डालने में मदद करती है।
- बच्चेदानी को गीला रख कर बच्चेदानी की पूरी सफाई करती है।
- बच्चेदानी में किसी भी प्रकार के इन्फैक्शन या मवाद की संभावना को समाप्त करती है।
- पशु को पूरे दूध पर लाती है।
- ब्याने के पश्चात् जनन अंगों को पुनः अपनी सामान्य अवस्था में लाकर अगले गर्भ धारण के लिए तैयार करती है जिससे पशु के दो ब्याँतों का समय (इन्टरकाविंग पीरियड) कम हो जाता है।

खुराक :

जेर गिराने के लिए :

बड़े पशुओ में : 250 मि.ली. हर 2 घण्टे बाद।

छोटे पशुओ में : 100 मि.ली. हर 2 घण्टे बाद।

गर्भाशय की सफाई के लिए :

बड़े पशुओ में : 100 मि.ली. रोजाना 10 दिनों तक।

छोटे पशुओ में : 50 मि.ली. रोजाना 10 दिनों तक।

उपलब्धता : 1 लीटर

युट्राविन : जेर गिराने व गर्भाशय की सफ़ाई के लिए

कूलमैक्स पॉउडर

(गर्मी से राहत प्रदान करने के लिए)

पशुपालक मित्रो, अपने पशुओं को गर्मी से राहत दिलाने के लिए आप कूलमैक्स पॉउडर का ही प्रयोग करें। जून-जुलाई में उत्तर भारत में मानसून की बरसात शुरू हो जाती है जिसके कारण वातावरण में उमस हो जाती है। उमस वाली गर्मी सहन करना बहुत ही मुश्किल होता है। जैसा कि देहात में कहावत भी है : "के मारे साझे का काम, के मारे भादों का घाम"

जब पशु गर्मी से बेहाल हो जाता है तो

- पशु के शरीर का तापमान बढ़ जाता है।
- पशु कम चारा खाता है।
- पशु का दूध कम हो जाता है।

कूलमैक्स पॉउडर पशु को गर्मी से राहत प्रदान करके सामान्य तापमान पर लाता है। जिससे पशु पुनः सामान्य चारा खाने लगता है और गर्मी की वजह से कम होने वाले दूध को वापिस लाता है। कूलमैक्स पॉउडर के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता है :

कैल्शियम लैक्टेट	1 ग्राम
पोटाशियम क्लोराइड	4 ग्राम
मैग्नीशियम सल्फेट	4.5 ग्राम
सोडियम क्लोराइड	0.8 ग्राम
सोडियम बाइकार्बोनेट	0.7 ग्राम
सोडियम सिटरेट	3 ग्राम
डैक्सट्रोज	39.1 ग्राम
ओरगेनिक क्रोमियम	0.9 ग्राम
वाटर सोल्यूबल कारबोहाइड्रेट	41 ग्राम
लैक्टोबैसिलस स्पोरोजिनस	1500 मिलियन स्पोरस
विटामिन सी	4.0 ग्राम

कूलमैक्स के लाभ :

कूलमैक्स पॉउडर

- पशु को गर्मी से राहत प्रदान करता है।
- पशु को वापिस सामान्य चारे पर लाता है।
- पशु को वापिस पूरे दूध पर लाता है।
- दस्तों में पशु के शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है।
- सर्दियों में छोटे पशुओं को ताकत प्रदान करता है।

खुराक :	बड़े पशुओं में	100 ग्राम दिन में दो बार
	छोटे पशुओं में	20-30 ग्राम दिन में दो बार
	मुर्गियों में	10 ग्राम 100 मुर्गियों के लिए

उपलब्धता :500 ग्राम, 1 किलोग्राम व 5 किलोग्राम

कूलमैक्स पॉउडर : गर्मी से राहत के लिए।

डाइजामैक्स फोर्ट बोलस

(भूख बढ़ाने के लिए)

पशुपालक मित्रों, आपने अनुभव किया होगा की जब पशु तनाव में हो या पशु को एन्टीबायोटिक का टीका लगाते हैं तो पशु का दूध कम हो जाता है। कारण, तनाव से या एन्टीबायोटिक लगने से पशु के पेट में लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या कम हो जाती है। लाभकारी सुक्ष्म जीवाणु पशुओं की चारा हज़म करने में मदद करते हैं । लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं के कारण ही दूध से दही बनती है। दूध से दही बनाने में लैक्टोबेसिलस नामक बैक्टिरिया सहायक होता है । अतः लाभकारी सुक्ष्म जीवाणु जीवित प्राणियों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं । पशु के पेट में लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ाने के लिए आप डाइजामैक्स फोर्ट बोलस का प्रयोग करें। डाइजामैक्स फोर्ट की प्रत्येक बोलस में मिलता है :

लाइव इस्ट कल्चर	:	17.5 बिलियन सीएफयू
प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि	:	100 मिली ग्राम
बोविजाइम	:	500 मिली ग्राम
सी फ्लोरा	:	1000 मिली ग्राम

जब भी आप पशु को ज्यादा मात्रा में गेहूँ, गेहूँ का दलिया या बाजरा-ज्वार की कड़वी खिलाते हैं तो पशु के पेट में तेजाब (लैक्टिक एसिड) बनना शुरू हो जाता है । तेजाब बनने से पशु के पेट की pH सामान्य से कम हो जाती है, जिससे पशु दाना-चारा छोड़ देता है। डाइजामैक्स में उपस्थित लाइव इस्ट कल्चर फरमनटेसन की प्रक्रिया द्वारा रुमन की pH को सामान्य बनाकर पशु को पुनः दाने-चारे पर लाती है । डाइजामैक्स फोर्ट की एक बोलस में 17.5 बिलियन लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनाने की क्षमता होती है। एक बिलियन में दस लाख होते है इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट की एक बोलस से 17.5 x 10,00,000 अर्थात् $\frac{175 \times 1000000}{10}$ = 1 करोड़ 75 लाख लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनाने की क्षमता होती है । डाइजामैक्स फोर्ट की दो बोलस की खुराक है। इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट की दो बोलस से 3 करोड़ 50 लाख लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनेगें । इतनी ज्यादा मात्रा में लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनने से फरमनटेसन की प्रक्रिया तुरन्त शुरू हो जाती है और परिणामस्वरुप रुमन की pH सामान्य हो जाती है । लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं का यह बायोमास प्रोटीन का बहुत अच्छा साधन होता है । जिससे पशु को उच्च कोटि का प्रोटीन उपलब्ध होता है और परिणामस्वरुप पशु की उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है

फरमनटेसन की प्रक्रिया के दौरान रुमन में वोलेटाइल फैटी एसिड्स व कुछ अन्य एसिड्स भी बनते हैं । वोलेटाइल फैटी एसिड्स तीन प्रकार के होते हैं : एसिटिक एसिड, प्रोपियोनिक एसिड और ब्यूटाइरिक एसिड । जब एसिटिक एसिड

बनता है तो पशु के दूध में फैट की मात्रा बढ़ जाती है । प्रोपियोनिक एसिड पशु को दूध उत्पादन के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है । ब्यूटाइरिक एसिड रुमन की दीवारो को मजबूती प्रदान करता है जिससे रुमन में फरमनटेसन की प्रक्रिया सुचारु रूप से होती रहती है।

प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि पेट में बनने वाले तेजाब को प्रोपियोनिक एसिड में बदलकर दूध उत्पादन के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है । और एन्टीबायोटिक लगाने के कारण होने वाले दूध के नुकसान की भरपाई करता है।

बोविज़ाइम विभिन्न प्रकार के एन्ज़ाइम पैदा करके पाचन क्रिया में पशु की मदद करता है। उदाहरण के तौर पर जब हम पशु को गेहूँ, जौ या बाजरा खिलाते हैं तो यह अमाइलेज नामक एन्ज़ाइम पैदा करके गेहूँ, जौ और बाजरे को हज़म करता है। जब हम पशु को खल, बिनौला या चाट खिलाते हैं तो बोविज़ाइम लाइपेज नामक एन्ज़ाइम पैदा करके खल, बिनौला और चाट को हज़म करने में पशु की मदद करता है।

बीमारी के कारण पशु में कमज़ोरी आना स्वाभाविक है। सी-फ्लोरा में उपस्थित पोषक तत्व पशु के शरीर में होने वाली क्रियाओं-प्रक्रियाओं को बढ़ावा देकर पशु की कमज़ोरी को दूर करते हैं।

जब पशु को बदहज़मी हो जाती है तो उसके गोबर में अनपचा दाना-चारा आने लगता है। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस का अद्भुत फार्मूला पशु की पाचन क्रिया को सुचारू बनाकर बदहज़मी ठीक करता है जिससे अनपचा दाना-चारा गोबर में नहीं आता । अतः जब भी आप अपने पशुओं के गोबर में अनपचा दाना-चारा देखें तो उसे तुरन्त डाइजामैक्स फोर्ट बोलस खिलाएँ ताकि पशु के शरीर को सारा दाना-चारा लग जाए ।

जब हम पशु को ज्यादा खल या बिनौला डालने लगते हैं तो कुछ समय बाद पशु खल-बिनौला खाना छोड़ देता है क्योंकि पशु के लीवर के चारों तरफ फैट जमा हो जाती है जिससे पशु चिकनी चीजें खानी छोड़ देता है। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस में उपस्थित बोविजाइम, लाईपेज नामक एन्ज़ाइम पैदा करके लीवर के चारों तरफ जमा फैट को हज़म करके पशु को पुनः खल-बिनौला पर लाती है। अतः जब भी आपका पशु खल-बिनौला या चिकनी चीजें खाना छोड़ दे तो आप उसे तुरन्त डाइजामैक्स फोर्ट बोलस खिलाएँ ताकि आपका पशु फिर से इन्हें खाने लग जाए।

जब पशु को अफारा हो जाए तो आप सहायक इलाज के तौर पर डाइजामैक्स फोर्ट बोलस अवश्य खिलाएँ। अफारा होने का कारण होता है पशु के पेट में हानिकारक सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ जाना । जिसके कारण पशु का पेट मिथेन नामक हानिकारक गैस से भर जाता है। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस में 17.5 बिलियन लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे होते हैं जो पशु के पेट में जाकर हानिकारक सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को कम कर देते हैं जिससे हानिकारक गैस बनना कम हो जाती है और पशु का अफारा ठीक हो जाता है।

पशुपालक मित्रों, अगर आप नियमित रूप से अपने पशु को एक डिब्बा डाइजामैक्स फोर्ट बोलस प्रत्येक महीने खिला रहे हैं तो आपको अनेक लाभ होंगे तथा आपके ऊपर कोई अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ेगा। नीचे लिखे उदाहरण से आपको समझने में आसानी होगी।

जब पशु को थनैला रोग हो जाता है तो उसे एन्टीबायोटिक लगना ही लगना है। कुछ तो थनैला रोग के कारण दूध कम हो जाता है और कुछ एन्टीबायोटिक लगने के कारण। देहात में एक कहावत है ''दुबली नै दो आषाढ़''। उदाहरण के तौर पर थनैला रोग से पहले आपका पशु 10 लीटर दूध रोजाना देता है। थनैला रोग होने पर यही पशु 5-6 लीटर दूध देने लगेगा क्योंकि दो-ढ़ाई लीटर दूध थनैला रोग कम कर देगा और दो-ढ़ाई लीटर दूध एन्टीबायोटिक का टीका कम कर देता है। थनैला रोग में अगर आप इलाज के साथ-साथ डाइजामैक्स फोर्ट बोलस देंगे तो यह एन्टीबायोटिक के कारण कम होने वाले दो-ढ़ाई लीटर दूध की मात्रा में कमी नहीं होने देगी और आपको 5-6 लीटर की बजाए 7½-8 लीटर दूध मिलेगा। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस दो सुबह दो शाम तीन दिन तक देते हैं अर्थात् आपको कुल 12 बोलस देनी हैं। चार बोलस की कीमत 53 रुपये है। इस प्रकार 12 बोलस की कीमत हुई 159 रूपये। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस देने से तीन दिन में आपको 6 से 7½ लीटर दूध का फायदा हुआ। एक लीटर दूध अगर आप 50 रुपये का भी लगाएँ तो आपको 300-375 रुपये का लाभ हुआ अर्थात् जितने रुपये आपने डाइजामैक्स फोर्ट बोलस पर खर्च किए उससे ज़्यादा रुपये का आपको लाभ भी हुआ। इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट बोलस अपनी कीमत स्वयं निकालती है जिससे आपके ऊपर कोई अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ता।

इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट बोलस पशुओं के लिए बहुत ही उपयोगी है। अतः आप डाइजामैक्स फोर्ट बोलस का एक डिब्बा हरदम अपने पास रखें और इसे निम्नलिखित परिस्थितियों में इस्तेमाल करें :

- दूध बढ़ाने के लिए।
- जब पशु तनाव में हो।
- जब पशु को एन्टीबायोटिक लगाया जाए।
- जब पशु दाना-चारा छोड़ दे।
- जब पशु को बदहजमी हो जाए।
- जब पशु के पेट में तेजाब बनने लगे।
- जब पशु खल-बिनौला खाना छोड़ दे।

- जब पशु को अफारा हो तो सहायक इलाज के रूप में।
- जब पशु अचानक ज़्यादा दलिया/चाट खा जाए।
- जब पशु को नया भूसा (तूड़ा) डाला जाए।
- जब पशु की आंतड़ियों में सूजन हो।
- जब पशु को गोबर का बंध पड़ जाए।

खुराक : बडे पशुओं में : 1-2 बोलस दिन में दो बार।

छोटे पशुओं में : ½-1 बोलस दिन में दो बार

उपलब्धता : एक स्ट्रिप में चार बोलस, एक डिब्बें में बीस स्ट्रिप

डाइजामैक्स फोर्ट बोलस :
एन्टीबायोटिक लगाने के बाद अवश्य खिलायें।

एनपीसी फोर्ट बोलस

(दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न को दूर करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब भी आपका पशु दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न से पीड़ित हो तो आप उसे तुरन्त एनपीसी फोर्ट बोलस खिलाएँ ताकि पशु को 10 मिनट के अन्दर-अन्दर राहत मिल जाए। एनपीसी फोर्ट की प्रत्येक बोलस में है :

निमुसलाइड	:	750 मिली ग्राम
पैरासिटामोल	:	1500 मिली ग्राम
क्लोरजोक्साजोन	:	1000 मिली ग्राम

निम्नलिखित परिस्थितियों में एनपीसी फोर्ट बोलस का इस्तेमाल करें :

- जब पशु को बुखार/तेज बुखार हो।
- जब पशु का शरीर अकड़ जाए।
- जब बछड़े का बधियाकरण करवायें।
- जब पशु शरीर दिखाता हो।
- जब पशु का कोई आप्रेशन हो।
- जब पशु को ब्याने में कठिनाई हो।
- जब पशु की जेर निकलवाई जाए।
- जब थनों में सूजन हो।
- जब पशु को गठिया बाव हो।
- जब पशु को लंगडा बुखार हो।
- जब काफ के सींग तलवायें।

खुराक : बड़े पशुओं में : दो बोलस दिन में दो बार,

छोटे पशुओं में : एक बोलस दिन में दो बार

उपलब्धता: एक स्ट्रिप में चार बोलस, एक डिब्बें में दस स्ट्रिप

एनपीसी फोर्ट बोलस : दस मिनट में राहत के लिए

मिनलाइस वेट सोप

(बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाने के लिए)

पशुपालक मित्रो, हमारे पशु बाहरी परजीवी जैसें कि जूँ, ढ़ेरे व चीचड आदि से काफी परेशान रहते हैं । ये परजीवी पशुओं का खुन चुसते रहते हैं । जिससे उनकी उत्पादन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है । जूँ, ढ़ेरे व चीचड आदि से अपने पशुओं को निजात दिलाने के लिए आप मिनलाइस वेट सोप का इस्तेमाल करें ।

मिनलाइस वेट सोप परमथरिन 5 प्रतिशत व अलोविरा 2 प्रतिशत के मिश्रण से बना है । परमथरिन बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाता है और अलोविरा त्वचा को मुलायम रखता है ।

पशु के शरीर को थोड़ा गर्म पानी से भिगोकर उसके ऊपर मिनलाइस वेट सोप रगड़ कर तब तक लगाये जब तक की झाग न बन जाए । मिनलासस वेट सोप लगाने के दस मिनट बाद पशु को नहला दें । नहलाने के बाद आप पायेगें कि सभी प्रकार के बाहरी परजीवी गायब हो चुके है ।

उपलब्धता : 75 ग्राम

मिनलाइस : बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाने के लिए

डाइजामैक्स पॉउडर

(शक्तिशाली सुक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार)

पशुपालक मित्रों, डाइजामैक्स पॉउडर शक्तिशाली सुक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार है । ये शक्तिशाली सुक्ष्म जीवाणु हर प्रकार के दाने-चारे को हज़म करने में सक्षम होते हैं । उदाहरण के तौर पर फरवरी - मार्च में जब गेंहूँ का तूड़ा समाप्ति कि ओर अग्रसर होता है तो आप लोग अपने पशुओं को धान की पराली खिलाते हैं । धान की पराली में पशुओं के शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्त्व बहुत कम मात्रा में होते हैं । अतः जब आप धान की पराली खिलाते हैं तो पशुओं का दूध व फैट दोनों कम हो जाते हैं । जैसे हम लोग स्वादहीन भोजन को मन मार कर खाते हैं वैसे ही पशु भी धान की पराली को मन मार कर खाते हैं । डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित शक्तिशाली सुक्ष्म जीवाणु धान की पराली से भी रस निकाल लेते हैं जिससे पशुओं का दूध व फैट दोनों कम नहीं होते ।

डाइजामैक्स पॉउडर के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता है :

फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर	:	33.5 ग्राम
बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स	:	6.75 बिलियन सीएफयू
बेसिलस सिटीलिस	:	6.75 बिलियन सीएफयू
प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि	:	6.75 बिलियन सीएफयू
एचएससीएएस बेस	:	पर्याप्त मात्रा
(हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एलुमिनोसिलिकेट)		

फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर बिल्कुल तैयार कल्चर होती है । जब भी हम कोई लाइव इस्ट कल्चर पशु को देते हैं तो वह रुमन में जाकर फरमेन्टेसन की प्रक्रिया को शुरू करने में पशु की मदद करती है जबकि फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर पशु के रुमन में जाकर समय खराब किये बिना तुरन्त रुमन की pH को सामान्य बना देती है ।

बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स, लिक्विफाइंग अमाइलेज पैदा करके गेहूँ, जौ, ज्वार व बाजरा से मिलने वाले स्टार्च को हज़म करता है । बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स, सबटिलिजम एन्ज़ाइम भी पैदा करता है । यह एन्ज़ाइम चने, बिनौला व बरसीम से मिलने वाले प्रोटिन को हज़म करने में उत्प्रेरक का काम करता है । इन सब के अलावा बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स, विभिन्न प्रकार के एन्ज़ाइम पैदा करके पशु के दाने-चारे से रस निकालने का काम भी करती है ।

प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि, जैसा इसका नाम वैसा इसका काम । अर्थात् प्रोपिनियमबैक्टिरियम, प्रोपिनियम नाम का एक बैक्टीरिया है जो पशुओं के पेट में बनने वाले तेजाब को प्रोपियोनिक एसिड में बदल देता है । प्रोपियोनिक एसिड पशु को दूध उत्पादन के लिए ऊर्जा प्रदान करके पशु का दूध बढ़ाता है । इस प्रकार प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि, हानिकारक तेज़ाब को दूध बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है । हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एलुमिनोसिलिकेट पशु के दाने-चारे में पाए जाने वाले हानिकारक जीवाणुओं (जैसे अचार में फफूंद लग जाता है) को गोबर के रास्ते बाहर निकाल देता है जिससे हानिकारक सुक्ष्म जीवाणु अपना दुष्प्रभाव नहीं छोड़ पाते और पशु की उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में आप डाइजामैक्स पॉउडर का इस्तेमाल करें :

असिडियोसिस / अलकेलोसिस

रुमन की pH का सामान्य से कम हो जाना असिडियोसिस तथा रुमन की pH का सामान्य से ज्यादा हो जाना अलकेलोसिस कहलाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि बीमारी के कारण पशु के रुमन व माइक्रोफ्लोरा के तालमेल में कमी आ जाती है । तालमेल में इस कमी के कारण फरमन्टेसन की प्रकिया सुचारु रूप से नहीं हो पाती । इस प्रकार फरमन्टेसन की प्रकिया में कमी के कारण रुमन में उपस्थित दाना - चारा अनपचा रह जाता है । अगर यह अनपचा दाना - चारा कारबोहाइड्रेट से भरपूर है तो रुमन की pH सामान्य से कम होगी और अगर यह अनपचा दाना - चारा प्रोटीन से भरपूर है तो रुमन की pH सामान्य से ज्यादा हो जाएगी । डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित सभी प्रकार के प्रोबायोटिक्स फरमन्टेसन की प्रकिया को सुचारू करके रुमन मे उपस्थित अनपचा दाना - चारा को हज़म कर देते हैं जिससे रुमन की pH सामान्य हो जाती है और पशु पुनः दाने - चारे पर आ जाता है । इस प्रकार डाइजामैक्स पॉउडर असिडियोसिस या अलकेलोसिस की समस्या को दूर कर देता है ।

जब पशु ने काफी दिनों से कुछ न खाया हो

जब पशु लम्बे समय तक बीमार रहता है तो बीमारी की वजह से भूख न लगना स्वाभाविक है । पशु मालिक को तसल्ली तब होती है जब पशु चरने लगता है । डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर रुमन में काफी दिनों से पड़े हुए अनपचे दाने-चारे को हज़म करके पशु की भूख को जागृत करने का काम करती है । जैसे - जैसे काफी दिनों से पड़ा हुआ अनपचा दाना-चारा हज़म होने लगता है वैसे-वैसे पशु अपनी सामान्य खुराक पर आने लगता है । इस प्रकार डाइजामैक्स पॉउडर पुराने से पुराने ऐनोरेक्सिया को भी ठीक कर देता है ।

जब पशु बहुत ज्यादा सुखा अनाज या दलिया खा जाये

देहात में कभी-कभी एक समस्या आती है। पशु को खिलाने के लिए हमने गर्म चाट-दलिया को ठण्डा करने के लिए रखा हुआ है। अचानक पशु अपनी बेल तुडवा-कर उस दलिया-चाट को खा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप पशु दाना-चारा छोड़ देता

है । कभी-कभी पशु को अचानक अनाज का ढेर मिल जाता है तो वह उसे खाने लगता है । बहुत ज्यादा मात्रा में सुखा अनाज खाने के कारण पशु दाना-चारा छोड़ देता है । क्योंकि बहुत ज्यादा अनाज खाने के कारण पशु के पाचन तन्त्र में बहुत कम मात्रा में लार आती है लार का काम रुमन की pH को सामान्य बनाना होता है । फरमनटेशन की प्रकिया के उपरान्त रुमन में वोलेटाईल फैटीएसिड व अन्य कुछ एसिड बनते हैं । बहुत कम मात्रा में लार बनने के करण रुमन की pH सामान्य से कम हो हो जाती है । अतः जब भी पशु अचानक ज्यादा सुखा अनाज या दलिया खा जाए तो उसे डाइजामैक्स पॉउडर अवश्य खिलाएँ ताकि पशु फिर से सामान्य खुराक पर आ जाए ।

जब पशु को रेशेदार (फाइबर युक्त) दाना-चारा दिया जाए

पशुपालक मित्रों, आपने गौर किया होगा कि जब कुत्ता मस्ती में घास पर बैठा हुआ होता है तो वह घास को खाने भी लगता है । थोड़ी ही देर के बाद कुत्ता खाए हुए घास की उल्टी कर देता है क्योंकि घास में रेशा (फाइबर) होता है जिसे कुत्ते का पेट हज़म नही कर सकता इसलिए कुत्ता खाए हुए घास की उल्टी कर देता है ।

रेशेदार दाने-चारे को अगर समझना हो तो हम अपने घरों से भी समझ सकते हैं । आटे की रोटी बनाने से पहले हमारी माँ-बहनें आटे को छलनी से छानती हैं । जो मोटा आटा छनने से रह जाता है उसमें अधिक मात्रा में रेशा होता है । अगर हम बगैर छलनी से छाने हुए आटे की रोटी खाएंगे तो छाने हुए आटे की अपेक्षा हम कम रोटी खा पाएंगे । जब पशु को कम पोषक आहार या सख्त चारा या नया तूड़ा खिलाया जाता है तो पशु को उसे पचाने में कठिनाई आती है । कारण सख्त भूसे में सैलूलोज अधिक मात्रा में होता है। सैलूलोज का पाचन सामान्य खुराक की अपेक्षा ज्यादा समय लेता है । डाइजामैक्स पॉउडर शक्तिशाली सुक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार है जो सैलुलेज एनज़ाईम पैदा करके सैलुलोज का पाचन आसान बना देता है । इस प्रकार यदि पशु को रेशेदार दाना-चारा हज़म करने में कठिनाई आ रही हो तो डाइजामैक्स पॉउडर का प्रयोग करना चाहिए ।

पतला गोबर / दस्त

जब पशु सामान्य प्रकार का ठोस गोबर न करके बुलबुले वाला गोबर करता है तो उसे पतला गोबर कहते हैं । पशु द्वारा पतला गोबर करने का कारण होता है आन्तड़ियों में फफूँदी की उपस्थिति । फफूंद के कारण पशु को पोषक तत्वों की आवश्यक पूर्ति नहीं हो पाती । अतः पशु पतला गोबर करने लगता है । पशु को दस्त लगने का कारण होता है फफूँदी द्वारा विषैलापन छोड़ना । फफूँदी द्वारा छोड़ा गया विषैलापन शरीर में हज़म होने पर पशु को दस्त लग जाते हैं । डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एलुमिनोसिलिकेट पशु की आन्तड़ियों को फफूँदी से मुक्त कर देता है जिससे पशु के दस्त ठीक हो जाते हैं । इस प्रकार पाचन तन्त्र में फैली हुई बीमारी समाप्त हो जाती है और पशु का पाचन तन्त्र सामान्य रूप से कार्य करने लगता है ।

आन्तड़ियों में सूजन

पशु की आन्तड़ियों में सूजन दो प्रकार से हो सकती है । एक तो सख्त चारा खाने से तथा दूसरा फफूँदी द्वारा आन्तड़ियों को

नुकसान पहुँचाने पर । सख्त चारे के कारण होने वाली सूजन तो सैलूलोज का पाचन होने पर समाप्त हो जाती है । जबकि फूँदी द्वारा आन्तड़ियों को नुकसान करने पर होने वाली सूजन हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एलुमिनोसिलिकेट के द्वारा फफूँदी को बाहर निकालने पर समाप्त हो जाती है। अतः दोनों ही प्रकार की सूजन में डाइजामैक्स पॉउडर जोरदार परिणाम प्रदान करता है ।

जब पशु बार-बार बीमार होता हो

डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स एन्टीबोडिज़ पैदा करके पशुओं में रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करती है जिससे पशु बार-बार बीमार नहीं होता है । थनैला रोग में जब पशुओं के दूध में ज्यादा मात्रा में कोशिकाएँ आने लगती है तो बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स दूध में ज्यादा कोशिकाओं को आने से रोक कर दूध की गुणवत्ता को बढ़ा देती है ।

जब पशु को ज्यादा मात्रा में कच्ची ज्वार खिला दी जाए :-

जून में पशुओं के लिए हरे चारे का ज्यादातर अभाव ही रहता है । क्योंकि बरसीन खत्म हो चुकी होती है और ज्वार की फसल तैयार नहीं होती है । ऊपर से उत्तर भारत में जून में वर्षा भी कम होती है । कुल मिलाकर खेती को पानी कम ही मिल पाता है । कुछ पशुपालक हरे चारे की पूर्ति के लिए अपने पशुओं को कच्ची ज्वार ही डालना शुरु कर देते हैं । कच्ची ज्वार के तने में ज्यादा मात्रा में नाइट्रेट होता है जिसे पशु नाइट्राइट में बदल देता है । नाइट्राइट पशुओं लिए हानिकारक होता है । इसलिए ज्यादा मात्रा में कच्ची ज्वार खाने के कारण कुछ पशु दाना-चारा छोड़ देते है । अतः जब पशु को ज्यादा मात्रा में कच्ची ज्वार खिला दी जाए तो उन्हें तुरन्त डाइजामैक्स पाउडर खिलाना चाहिए क्योंकि डाइजामैक्स पाउडर में उपस्थित *प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि* नाइट्रेट को नाइट्रोजन गैस में बदल देती है जिससे रुमन में नाइट्राइट नहीं बनता और परिणामस्वरूप पशु फिर से दाना-चारा खाने लगता है ।

खुराक : बडे पशुओं के लिए 10 से 15 ग्राम रोज़ाना

छोटे पशुओं के लिए 2 से 5 ग्राम रोज़ाना

उपलब्धता : 300 ग्राम व एक किलोग्राम

डाइजामैक्स पॉउडर : पाचन तन्त्र की देखभाल के लिए

बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं में गर्भ ठहराने का तरीका

पशुपालक मित्रों, पशुओं का बार-बार गाभिन होना एक बहुत बड़ी समस्या है। बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं से पशुपालकों को बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान होता है। कई बार पशुपालक ऐसे पशुओं से तंग आकर उन्हें कौड़ियों के दाम बेच देते है। अब आपको बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं से तंग नहीं होना है बल्कि एक अन्तिम प्रयास के रूप में नीचे बताए गए तरीके को अपनाना है ।

पशुओं के बार-बार गाभिन होने के मुख्यतः दो कारण होते है :

पहला पशुओं की बच्चेदानी में इन्फैक्शन (बीमारी) हो जोना ।

दूसरा पशुओं की बच्चेदानी में कुछ अनियमितताएँ होना ।

पहला कदम

बार-बार गाभिन होने वाले पशु जब हीट में आए तो इस बार उनमें बीज नहीं रखवाना चाहिए बल्कि लगातार तीन दिनों तक 100 एम० एल० यूट्राविन-ओजेड बच्चेदानी में रखवाएँ । 70 ग्रा० रोज़ाना के हिसाब से न्यूक्लियोटोन पॉउडर तीन दिनों तक खिलाएँ ।

दूसरा कदम

चौथे दिन से टोक्साउट पॉउडर 1 कि० ग्रा० तथा जस्टाप्रोजन 1 कि० ग्रा० का मिश्रण बनाकर रोजाना 120 ग्राम 17 दिनों तक खिलाएँ ।

तीसरा कदम

इस बार पशु जब हीट में आए तो आप बीज रखवायें तथा 50 ग्राम जस्टाप्रोजन 10 दिनों तक खिलायें। अगर पशुपालक इस तरीके को अपनाएंगे तो उम्मीद है कि आपका पशु गर्भधारण करेगा तथा आपकी आस सफल होगी।

उपरोक्त तरीके को आप इस प्रकार भी समझ सकते हैं। गाय / भैंस 21 दिन बाद हीट में आती है ।

1, 2, 3 — पहले तीन दिन 100 एम. एल. यूट्राविन-ओजेड रोज़ाना बच्चेदानी में रखवायें और 70 ग्रा० रोज़ाना के हिसाब से न्यूक्लियोटोन पॉउडर तीन दिनों तक खिलाएँ ।

4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20 —

टोक्साउट पॉउडर + जस्टाप्रोजन

1 कि० ग्रा० 1 कि० ग्रा०

इस मिश्रण का रोज़ाना 120 ग्राम 17 दिनों तक खिलायें ।

21 — बीज रखवायें तथा 50 ग्राम जस्टाप्रोजन रोज़ाना 10 दिनों तक खिलायें।

एनरबूस्ट पॉउडर

(पशुओं में ऊर्जा की कमी का एक समाधान)

पशु पालक मित्रों, जब पशु दूध देना बन्द कर देता है तो हम पशुओं के रखरखाव पर बहुत कम ध्यान देते हैं और उसे पौष्टिक आहार भी देना बन्द कर देते हैं । जबकि गर्भास्वथा के अन्तिम तीन महीनों में पशुओं को बच्चे के विकास के लिए पौष्टिक आहार की बहुत ज्यादा आवश्यकता होती है ।

दूसरा, आपने गौर किया होगा कि जब पशु बच्चा जन ता है तो देहात में प्रसव के तुरन्त बाद पशु को रूखा-सूखा खाने को देते है जबकि प्रसव के दौरान पशु के शरीर से बहुत ज्यादा ऊर्जा निकलती है और परिणामस्वरूप प्रसव के उपरान्त पशु दबाव में होता है और उसका 80 से 100 किलोग्राम तक वज़न कम हो जाता है । पशु को फिर से अपना सामान्य वज़न प्राप्त करने में लगभग 22 सप्ताह तक का समय लग जाता है।

तीसरा, जब पशु दूध के अपने उच्चतम स्तर को प्राप्त करता है तो उसे बहुत ज्यादा ऊर्जा की आवश्यकता होती है लेकिन पशु को जो खुराक दी जाती है उससे उसकी ऊर्जा की पूर्ति नहीं हो पाती है और परिणामस्वरूप पशु में ऊर्जा की कमी रह जाती है । इस प्रकार प्रसव से पहले जब पशु दूध देना बन्द कर देता है तब से लेकर प्रसव के दौरान व प्रसव के बाद दूध के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने तक का जो समय है वह ऊर्जा की कमी का समय है। ऊर्जा की कमी के कारण पशु निम्नलिखित तरीके से व्यवहार करता है :

ज्यादा दूध देने वाले पशुओं को

↓

जब कम खुराक मिलती है तो

↓

इससे पशुओं में ऊर्जा की कमी हो जाती है

↓

ऊर्जा की पूर्ति के लिए पशु शरीर में जमा पोषक तत्वों को पिघलाने लगता है

↓

जिससे पशु कमजोर हो जाता है

↓

जिससे पशुओं में कई प्रकार की समस्याएँ आ जाती है। जैसेः कीटोसीस, कम दूध देना व देरी से हीट में आना।

पशुओं में ऊर्जा की पूर्ति के लिए देहात में सरसों का तेल या देशी घी खिलाने का रिवाज है। लेकिन वास्तव में देशी घी या सरसों का तेल खिलाने से पशुओं को कोई लाभ नहीं होता बल्कि हानि ही होती है और पशुपालकों के पैसे व्यर्थ चले जाते है ।

पशुओं को देशी घी या सरसों का तेल खिलाने के कारण निम्नलिखित नुकसान होते है :

1) घी या तेल के कारण रुमन में लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या कम हो जाती है ।

2) घी या तेल की फाइबर पर एक परत जम जाती है जिसके कारण लाभकारी सुक्ष्म जीवाणु फाइबर का पाचन अच्छी प्रकार से नहीं कर पाते है ।

3) फाइबर का पाचन कम होने के कारण पशु को कम ऊर्जा मिलती है ।

नगेटिव एनर्जी बैलन्स क्या होती है ?

जब पशु के शरीर को मिलने वाली ऊर्जा पशु के शरीर से खर्च होने वाली ऊर्जा से कम होती है तो ऊर्जा की इस कमी को नगेटिव एनर्जी बैलन्स कहते हैं । लगातार कम ऊर्जा मिलने के कारण पशु कमज़ोर हो जाता है । उदाहरण के तौर पर जब किसी व्यक्ति की आय कम और खर्चा ज्यादा हो तो उसे घर खर्च चलाने के लिए पैसे उधार लेने ही पड़ेंगे । लगातार पैसे उधार लेने के कारण एक दिन ऐसा आएगा कि वह व्यक्ति कर्ज में डूब जाएगा । जब तक उसे बाहर से आर्थिक मदद नहीं दी जाएगी तब तक उसका कर्जा नहीं उतरेगा और वह व्यक्ति कर्जवान ही रहेगा । ठीक इसी प्रकार नगेटिव एनर्जी बैलन्स में जब तक पशु की बाहर से ऊर्जा की पूर्ति नहीं की जाएगी तब तक वह पशु कमज़ोर ही रहेगा और उसकी उत्पादन क्षमता कम ही रहेगी ।

नगेटिव एनर्जी बैलन्स के लक्षण

1) ब्याने के बाद पशु बिल्कुल भी दूध नहीं देता ।

2) ब्याने के बाद पशु बहुत कम दूध देता है ।

3) पशु पिछले ब्याँत की अपेक्षा कम दूध देता है ।

4) पशु के दूध में फैट की मात्रा कम होती है अर्थात् पशु का दूध बिल्कुल पानी जैसा पतला होता है ।

5) दूध देने के कारण पशु कमज़ोर रहता है । (देहात में कहते है कि हमारा पशु दूध से कटता है ।)

6) पशु के शरीर की हड्डियाँ दिखाई देती है ।

7) पशु देरी से हीट में आता है ।

नगेटिव एनर्जी बैलन्स में ऊर्जा की प्राप्ति के लिए एनरबूस्ट पॉउडर का प्रयोग करें । एनरबूस्ट पॉउडर के प्रत्येक एक किलोग्राम में मिलता है :

रुमन बाइपास फैट	:	150 ग्राम
रुमन बाइपास प्रोटिन	:	10 ग्राम
कैल्शियम प्रोपियोनेट	:	20 ग्राम
फरमेन्टिड इस्ट कल्चर	:	50 ग्राम
अवेलेबल कैल्शियम	:	15 ग्राम

रुमन बाइपास फैट और प्रोटिन वह फैट और प्रोटिन होते हैं जो रुमन में उपस्थित लाभकारी सुक्ष्म जीवाणुओं को बाइपास करके सीधे छोटी आँत में हज़म हो जाते हैं । रुमन बाइपास फैट और प्रोटिन देने से पशुओं का दूध उत्पादन बढ़ता है, दूध में फैट की मात्रा बढ़ती है तथा पशुओं की प्रजनन क्षमता भी बढ़ती है । जब हमारे घरों में बहू को बच्चा होने वाला होता है तो हमारी माताएँ अगली पीढ़ी आने के चाव में बहू के खाने के लिए एक-दो महीना पहले से ही घी जोड़ना शुरू कर देती हैं । घी, फैट ही तो होता हैं । घी खाने से बहूरानी को ऊर्जा मिलती है, इसलिए जच्चा को घी खिलाने का रिवाज़ है । इसी प्रकार प्रत्येक जच्चा पशु को एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए ताकि पशु को भरपूर मात्रा में ऊर्जा मिल सके और पशु ब्याने के तनाव से मुक्त हो जाए ।

रुमन में फरमनटेन्सन की प्रक्रिया के बाद तीन प्रकार के वोलेटाइल फैटी एसिडस बनते है : एसिटिक एसिड, प्रोपियोनिक एसिड और ब्यूटाइरिक एसिड । प्रोपियोनिक एसिड पशु को दूध उत्पादन के लिए ऊर्जा प्रदान करता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है । कैल्शियम प्रोपियोनेट, प्रोपियोनिक एसिड बनाकर पशु के दूध उत्पादन को बढ़ाने में सहायता करता है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में एनरबूस्ट पॉउडर का इस्तेमाल करें :

1) कीटोसिस जब पशु के शरीर से खर्च होने वाली ऊर्जा पशु को मिलने वाली ऊर्जा से ज्यादा होती है तो पशु अपने शरीर में जमा पोषक तत्त्वों को पिघलाकर आवश्यक ऊर्जा की पूर्ति करने लगता है । लगातार पोषक तत्त्वों कोपिघलाकर ऊर्जा की पूर्ति करने के कारण पशु के खून व पेशाब में किटोन बोडिज़ आना शुरू हो जाती है । अगर किटोन बोडिज़ की शरीर से बहुत अधिक मात्रा में निकासी हो जाए तो पशु बेहोश भी हो सकता है । अतः जब पशु के शरीर से किटोन बोडिज़ आना शुरू हो जाए तब पशुओं को एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए ताकि पशुओं के शरीर की ऊर्जा की पूर्ति हो जाए और पशुओं के शरीर से किटोन बोडिज़ आना बन्द हो जाए ।

2) मिल्क फीवर जब पशु मिल्क फीवर में आ जाता है तो आप उसे कैल्शियम की बोतल चढ़वाते हैं । कैल्शियम की बोतल चढ़वाने के बाद भी कुछ पशु दुबारा से मिल्क फीवर में आ जाते हैं तथा कुछ पशु दूध से नहीं चल पाते । अतः अपने पशु को कैल्शियम की बोतल चढ़वाने के बाद एक पैकेट एनरबूस्ट अवश्य खिलाएँ । इससे दो लाभ होगें । एक तो आपका पशु फिर से मिल्क फीवर में नहीं आएगा और दूसरा आपका पशु दूध से भी चल जाएगा । अगर आप ब्याने से लगभग 15 दिन पहले अपने पशु को एनरबूस्ट खिलाना शुरू कर देगें तो आपका पशु मिल्क फीवर में आएगा ही नहीं तथा ब्याने के बाद दूध भी पूरा देगा ।

3) दूध बढ़ाने के लिए वैज्ञानिकों का मानना है 10 लीटर से ज्यादा दूध देने वाले प्रत्येक पशु में नगेटिव एनर्जी बैलन्स होता ही होता है । अत : आप प्रत्येक उस पशु को जो 10 लीटर से ज्यादा दूध देता है ब्याने के 15 दिन पहले से लेकर ब्याने के बाद 30 दिनों तक एनरबूस्ट खिलाएंगे तो आपके पशु मे ऊर्जा की कमी नही रहेगी और पशु पूरा दूध देगा ।

4) जब ब्याने के बाद पशु बिल्कुल भी दूध न दे या जब पशु पिछले ब्याँत से कम दूध दे जब पशु बहुत ज्यादा नगेटिव एनर्जी बैलन्स का शिकार हो जाता है तो वह पशु ब्याने के बाद या तो बिल्कुल भी दूध नहीं देता या फिर बहुत कम दूध देता है । इसका एक कारण तो होता है, ब्याने के दिन तक पशु का दूध निकालना । यदि साल के 365 दिनों का विभाजन करें तो एक गाय / भैंस से 305 दिन दूध लेना चाहिये तथा बाकि 60 दिन उसे सूखा छोड़ देना चाहिये ताकि वह पशु बच्चे के विकास के लिए तथा अगले ब्याँत में दूध उत्पादन के लिए जरूरी ऊर्जा की भरपाई कर सके । जो पशुपालक ब्याने से 15-20 दिन पहले तक अपने पशु से दूध लेते रहते हैं उन्हें फिर अगले ब्याँत में दूध नहीं मिलता है । अतः ऐसे सभी मामलों में एनरबूस्ट पॉउडर का प्रयोग करें और अपने पशु से अच्छी मात्रा में दूध प्राप्त करें ।

5) जब पशु के शरीर की हड्डियाँ दिखाई देती हों कई पशु जब तक दूध देते हैं तब तक कमज़ोर रहते हैं अर्थात् उनकें शरीर की हड्डियाँ दिखाई देती हैं । देहात में कहते है कि हमारा पशु दूध से कटता है । इसका मतलब है कि पशु को दूध उत्पादन के लिए जो ऊर्जा चाहिए वह ऊर्जा उसे खुराक से नहीं मिल रही है । लगातार ऐसा होने के परिणामस्वरूप पशु के शरीर की हड्डियाँ दिखाई देने लगती है । जब पशु दूध देने के कारण हड्डियाँ दिखाता हो तो उसे तुरन्त एनरबूस्ट पॉउडर खिलाना चाहिए ताकि उसकी ऊर्जा की जरूरत पूरी हो जाए और पशु स्वस्थ दिखाई देने लगे ।

6) जब पशु का गर्भपात हो जाए या पशु समय से पहले बच्चा जन दे कई बार जब पशु गर्भावस्था के छठे, सातवें या आठवें महीने में बच्चा फैंक देता है तो उसे दूध पर लाना बड़ा मुश्किल होता है। पशुपालक चाहते हैं कि किसी भी तरह से पशु दूध पर आ जाए ताकि कुछ तो नुकसान कम हो । ऐसे में पशुपालकों को दूध व बच्चे दोनों का नुकसान होता है। इस प्रकार केमामलों मे एनरबूस्ट पॉउडर 200 ग्राम सुबह - शाम देना चाहिए ताकि पशु को भरपूर ऊर्जा मिल जाए और पशु दूध पर आ जाए ।

7) जब पशु तनाव में हो जब भी पशु किसी प्रकार से तनाव में होता है तो उसके शरीर से बहुत ज्यादा ऊर्जा की निकासी हो जाती है परिणामस्वरूप पशु का दूध उत्पादन कम हो जाता है । अतः जब भी आपका पशु किसी भी कारण से तनाव में दिखाई दें तो उसे तुरन्त एनरबूस्ट पॉउडर खिलाना चाहिए ताकि पशु के शरीर को बराबर ऊर्जा मिलती रहे और दूध उत्पादन में कमी न आए । जब व्यापारी बन्धु पशुओं को एक राज्य से दूसरे राज्य में लेकर जाते है तो लम्बी यात्रा के कारण पशु तनाव में आ जाता है और वह पशु दूसरे राज्य में जाकर पूरा दूध नहीं देता । अतः जब भी व्यापारी बन्धु पशुओं को एक राज्य से दूसरे राज्य में लेकर जाए तो दूसरे राज्य में जाने पर पशुओं को एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाएँ ताकि दूसरे राज्य में जाकर भी पशु पूरा दूध देने लग जाए ।

8) हीट मे लाने के लिए प्रसव के दबाव के कारण पशु का वज़न 80 से 100 किलोग्राम कम हो जाता है । पशु को अपना सामान्य वज़न फिर से प्राप्त करने मे लगभग 22 सप्ताह तक का समय लग जाता है अगर आप पशु के ब्याने के लगभग 15 दिन पहले एनरबूस्ट खिलाएगें तो पशु पर प्रसव का दबाव कम हो जाएगा और पशु को अपना सामान्य वज़न प्राप्त करने मे 22 सप्ताह का समय न लगकर कम समय लगेगा और परिणामस्वरूप पशु समय पर हीट मे आयेगा ।

खुराक :

ब्याने से 15 दिन पहले 100 ग्राम दिन में एक बार	=	1500 ग्राम
ब्याने के बाद एक सप्ताह तक 100 ग्राम दिन में दो बार	=	1400 ग्राम
ब्याने के एक सप्ताह बाद से अगले तीन सप्ताह तक 100 ग्राम दिन में एक बार	=	2100 ग्राम
कुल खुराक	=	5000 ग्राम

इस प्रकार एनरबूस्ट पॉउडर की कुल खुराक पाँच किलोग्राम बनती है ।

पशु पालक मित्रों, अगर आप ब्याने से 15 दिन पहले अपने पशुओं को एनरबूस्ट पॉउडर खिलाएंगे तो आपका पशु मिल्क फिवर में नहीं आएगा इस बात की हमारी जवाबदारी है ।

उपलब्धता : एक किलोग्राम, पाँच किलोग्राम,
दस किलोग्राम व बीस किलोग्राम

एनरबूस्ट पॉउडर : पशुओं को तुरन्त ऊर्जा प्रदान करने के लिए

जस्टाप्रोजन पॉउडर

(सुरक्षित गर्भकाल के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब आपका पशु बार-बार गाभिन होता हो या फिर आपको अपने पशु के गर्भपात होने का डर रहता हो या फिर आपके पशु का बार-बार गर्भपात होता हो तो समझो, आपके पशु की बच्चेदानी में कुछ अनियमितताएँ आ गई हैं । बच्चेदानी की इन अनियमितताओं को दूर करने के लिए जस्टाप्रोजन पॉउडर का प्रयोग करना चाहिए ।

जस्टाप्रोजन पॉउडर एक आयुर्वैदिक औषधि है जिसमें 8 प्रकार की जड़ी - बूटियों का मिश्रण है । जस्टाप्रोजन पॉउडर के प्रत्येक 250 ग्राम पैक में मिलता है :

शरुनगटक	6 ग्राम	पूतरनजीवा	4 ग्राम
शतमूली	6 ग्राम	कलाबोल	4 ग्राम
कठूफल	6 ग्राम	कुमूद	4 ग्राम
शतपर्वा	2 ग्राम	कासेरुक	3 ग्राम

शरुनगटक : बच्चेदानी को गर्भ धारण करने के लिए तैयार करती है ।

शतमूली : गर्भाशय के लिए एक बहुत ही ताकतवर औषधि है । इसलिए बच्चेदानी में होने वाली सभी प्रकार की अनियमिताओं को दूर करती है ।

कठूफल : यह जनन अंगों में शुक्राणुओं को जीवित रखने का काम करती है । अण्डे व शुक्राणु का मिलन फलोपियन ट्यूब में होता है। अतः यह शुक्राणुओं की वजाइना से लेकर फलोपियन ट्यूब तक की यात्रा को सुरक्षित करती है।

शतपर्वा : गर्भाशय में किसी भी प्रकार के विकार को होने नहीं देती । शुरूआत में अम्बरियों की गर्भ में रक्षा करना और पशु को गर्भपात से बचाना इसके मुख्य कार्य है ।

पूतरनजीवा : जैसा इसका नाम वैसा इसका काम । वैदिक काल से इस जड़ी-बूटी को उन महिलाओं को देते आ रहे है जिनमें बार-बार गर्भपात होता है । अर्थात् गर्भ में पल रहे बच्चे की रक्षा करना इसका काम है। बच्चेदानी में किसी भी प्रकार की अनियमिता नहीं होने देती ।

कलाबोल : इस जड़ी-बूटी से अलोइन नाम का ग्लाइकोसाइड निकलता है जो कि बच्चेदानी के लिए एक ताकतवर औषधि है, जिसके कारण बच्चेदानी अपने सभी कार्य सुचारू रूप से करती रहती है।

कुमुद : अम्बरियों की बच्चेदानी से चिपकने में मदद करती है ।

कासेरूक : गर्भधारण करने में मदद करती है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में जस्टाप्रोजन पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए :

प्रोजस्टिरोन हारमोन की कमी होने पर : पशुओं में प्रोजस्टिरोन हारमोन की कमी के कारण गर्भपात होने लगता है । अतः आप उन्हें गर्भपात से बचाने के लिए प्रोजस्टिरोन हारमोन का टीका लगवाते है, जिससे उनकी प्रोजस्टिरोन हारमोन की तात्कालीक पूर्ति हो जाती है और पशु गर्भपात से बच जाता है । गर्भावस्था के अन्तिम दिनों तक प्रोजस्टिरोन हारमोन के स्तर को बनाए रखने के लिए आप प्रोजस्टिरोन हारमोन का टीका लगवाने के तुरन्त बाद पशुओं को जस्टाप्रोजन पॉउडर अवश्य खिलवायें ताकि पशु कुदरती तौर पर कोरपस ल्यूटियम व प्लेसन्टा के द्वारा अपने आप प्रोजस्टिरोन हारमोन बनाने लग जाए और पशु का गर्भ सुरक्षित रहे ।

जब पशु शरीर दिखाता हो : कई बार गर्भावस्था के दौरान पशु शरीर दिखाने लगता है क्योंकि लगातार गर्भ धारण करने के कारण बच्चेदानी की माँसपेशियाँ ढीली पड़ जाती है । माँसपेशियों में संकुचन पैदा करने के लिए आप उन्हें आई०/वी० कैल्शियम दिलवाते है जिससे माँसपेशियों सिकुड जाती है और पशु शरीर दिखाना बन्द कर देता है । आई०/वी० कैल्शियम तो पशु को फौरी तौर पर राहत प्रदान करता है । जैसे-जैसे पशु में कैल्शियम की कमी होने लगती है वैसे-वैसे पशु फिर से शरीर दिखाने लगता है । अतः आप आई०/वी० कैल्शियम दिलवाने के तुरन्त बाद पशुओं को जस्टाप्रोजन पॉउडर खिलवायें ताकि बच्चेदानी की सभी प्रकार की अनियमितताएँ दूर हो जाए व पशु शरीर दिखाना बन्द कर दें ।

जब पशु का गर्भपात होने का खतरा हो : कई बार पशु गर्भावस्था के दौरान जेरा सा डालने लगता है, जिसके कारण हमें लगता है कि पशु का गर्भपात होने ही वाला है । अतः जब भी पशु जेरा सा डालने लगे तो उसे तुरन्त जस्टाप्रोजन पॉउडर खिलाना चाहिए ताकि पशु को गर्भपात होने से बचाया जा सके ।

जब पशु बार-बार गाभिन होता हो : पशु बार-बार गाभिन होने का एक मुख्य कारण होता है पशु की बच्चेदानी में इन्फैक्सन / बीमारी होना । बीमारी को दूर करने के लिए आप या तो बच्चेदानी की सफाई करवाते है या फिर एन्टीबायोटिक लगवाते हैं । बच्चेदानी की सफाई करने से या एन्टीबायेटिक लगवाने से तो केवल बीमारी / इन्फैक्शन दूर होती है लेकिन बीमारी के कारण बच्चेदानी में जो अनियमितताएँ आ गई है उन्हें दूर करने के लिए आप कुछ नहीं

भेड़ पालक कृपया ध्यान दें : मई-जून में गर्मी के कारण भेड़ो में बहुत ज्यादा संख्या में गर्भपात होने लगता है । अतः अगर आप अपनी सभी गाभिन भेड़ो को अप्रैल में ही जस्टाप्रोजन पॉउडर 5 - 10 ग्राम खिलाएगें तो मई-जून में गर्भपात होने की सम्भावना काफी कम हो जाएगी । अतः भेड़ो में आस बनाये रखने के लिए जस्टाप्रोजन पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए ।

खुराक :

गर्भपात से बचाने के लिए : 25 ग्राम रोज़ाना 10 दिनों तक

जब पशु बार-बार गाभिन होता हो : जब पशु बार-बार गाभिन होता है तो वह प्रत्येक 21 दिन बाद हीट में आता ही आता है । ऐसे पशुओं को बीज रखवाने के तुरन्त बाद 25 ग्राम प्रतिदिन 20 दिनों तक अवश्य दिलाना चाहिए ।

उपलब्धता : 250 ग्राम व 500 ग्राम

जस्टाप्रोजन पॉउडर : सुरक्षित गर्भकाल के लिए

मिनवर्म

(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, जैसा कि आप जानते हैं किसी भी फसल में अगर खरपतवार हो तो वह फसल कमजोर रह जाती है। उसी प्रकार अगर पशु के पेट में कीड़े हों तथा शरीर के ऊपर मच्छर, मक्खी, चीचड, जूँ, ढेरे व शोरी हो तो उस पशु का विकास पूरी तरह से नहीं हो पाता और वह कमजोर रह जाता है क्योंकि पेट के कीड़े 20 से 30 प्रतिशत तक पशु का दाना-चारा हज़म कर जाते हैं। अगर हमारे बच्चे के पेट में भी जूण हो तो वह कमजोर रहता है। इसी प्रकार पेट में कीड़े होने के कारण पशु भी कमजोर रहता है। पशुओं के पेट में कीड़े होने पर आपको निम्नलिखित लक्षण दिखाई देंगे :

- दूध व वजन में कमी
- बदबूदार व पतला गोबर
- चमडी में खुरदरापन एवं चमक में कमी
- आँखों में गीढ़ का आना
- प्रजनन क्षमता में कमी

पेट के कीड़ों के लिए आप पशुओं को दवा देते हैं तथा मच्छर, मक्खी, चीचड़, जूँ, ढेरे व शोरी के लिए आप आइवरमैक्टिन का टीका लगवाते हैं । अब आपको पेट के कीड़ों की दवा व आइवरमैक्टिन दोनों का मिश्रण मिनवर्म में उपलब्ध है।

मिनवर्म में पेट के कीड़ों के लिए एलबन्डाज़ोल तथा शरीर के अन्दर व बाहर दोनों प्रकार के कीड़ों के लिए आइवरमैक्टिन है। पेट के कीड़ों के लिए एलबन्डाज़ोल बाज़ार में उपलब्ध सबसे अच्छी दवा है क्योंकि यह हर प्रकार के कीड़े की हर अवस्था को मारती है। अतः आप पशुओं को हर प्रकार के कीड़ों से छुटकारा दिलाने के लिए मिनवर्म ही पिलवायें।

खुराक :
- एक एम.एल. 4 से 5 कि. ग्राम वजन के लिए
- मिनवर्म छोटे पशुओं के लिए 30 एम.एल. पैक में उपलब्ध है।
- मिनवर्म बड़े पशुओं के लिए 90 एम.एल. पैक में उपलब्ध है।
- मिनवर्म एक लीटर पैक में भी उपलब्ध है। जिससे एक साथ कई पशुओं के पेट के कीड़ों का सफाया हो जाता है ।

पेट के कीड़े 20 से 30 प्रतिशत तक पशुओं का दाना-चारा हज़म कर जाते हैं। अतः आइये पेट के कीड़ों की वजह से होने वाले आर्थिक नुकसान की गणना करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम एक पशु को रोज़ाना औसतन 6 किलो ग्राम बाखर

(चाट, चोकर, आटा आदि) 10 किलो ग्राम सूखा चारा तथा 5 किलो ग्राम हरा चारा डालते हैं तो पेट के कीड़ों की वजह से होने वाला नुकसान इस प्रकार है :

वस्तु का नाम	पेट के कीड़ों से नुकसान (किलो ग्राम में)	वस्तु की दर प्रति किलो ग्राम (₹)	आर्थिक नुकसान (₹)
बाखर (6 किलो ग्राम)	1.2 से 1.8	18	22 से 32
सूखा चारा (10 किलो ग्राम)	2 से 3	3	6 से 9
हरा चारा (5 किलो ग्राम)	1 से 1.5	3	3 से 5
कुल आर्थिक नुकसान			31 से 46 रुपये

इस प्रकार पेट के कीड़ों की वजह से हमें प्रत्येक पशु पर रोजाना 31 से 46 रुपये का नुकसान होता है। तीन महीने में यही नुकसान (31 x 90, 46 x 90) 2790 से 4140 रुपये हो जाता है। तीन महीने में एक बार हमें पशु को पेट के कीड़ों की दवा देनी चाहिए। मिनवर्म 90 एम.एल. की कीमत 83 रुपये है। अतः मात्र 83 रुपये खर्च करके हम 4140 रुपये का नुकसान बचा सकते हैं।

अगर यह 20 से 30 प्रतिशत चारा पेट के कीड़े हज़म नहीं करते तो कुछ न कुछ तो दूध बढ़ता तथा पशु समय से गर्भधारण करता। अतः पेट के कीड़ों की वजह से हमें आर्थिक नुकसान के साथ-साथ दूध का नुकसान तथा देरी से नई पीढ़ी मिलने का नुकसान अर्थात् तीन गुणा नुकसान होता है। अतः पशुपालक मित्रों, आप जागिए और मात्र 83 रुपये खर्च करके 4140 रुपये का नुकसान बचाए ।

कृपया ध्यान दें : मिनवर्म गाभिन पशु को नहीं देनी चाहिए ।

उपलब्धता : 30 एम० एल०, 90 एम० एल० व 1 लीटर

मिनवर्म : सभी प्रकार के पेट के कीड़ों की सभी अवस्थाओं का सफ़ाया करने के लिए

मिनफ्लुक-डीएस

(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पशुओं के पेट में कई प्रकार के कीड़ें होते हैं। जैसे : गोल कीड़े, चपटे कीड़े, जिगर के कीड़े व रुमनफ्लुक । जो पशुपालक जोहड़ पर अपने पशुओं को पानी पिलाने के लिए ले जाते हैं उन्होनें जोहड़ के किनारे पर पत्तों के आकार तथा शंख के आकार की कुछ बनावटें अवश्य देखी होंगी। पत्तों के आकार की बनावट और कुछ नहीं जिगर का कीड़ा होता है। जिसे लिवरफ्लुक कहते हैं तथा शंख के आकार की बनावट और कुछ नहीं रुमन (पेट) का कीड़ा होता है, जिसे रुमनफ्लुक अर्थात् एम्फिस्टोम कहते हैं।

जिगर का कीड़ा (लिवरफ्लुक)

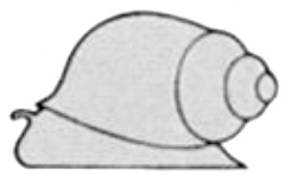

रूमनफ्लुक अर्थात् एम्फिस्टोम

मिनफ्लुक-डीएस जिगर के कीड़े, रुमन के कीड़े, गोल या चपटे कीड़े, सभी प्रकार के कीड़ों पर प्रभावशाली है।

मिनफ्लुक-डीएस की प्रत्येक बोलस में मिलता है:		
ओक्सिकलोजेनाइड	=	4 ग्राम
लिवामिसोल	=	2 ग्राम

ओक्सिकलोजेनाइड जिगर के कीड़ों व रुमन के कीड़ों को मारती है, तथा लिवामिसोल पेट के अन्य कीड़ों पर असरकारक है। इस प्रकार मिनफ्लुक-डीएस पेट के सभी प्रकार के कीड़ों का सम्पूर्ण सफ़ाया करती है। मिनफ्लुक-डीएस गाभिन पशुओं को भी दे सकते हैं।

खुराक :

- बड़े पशुओं में एक बोलस

उपलब्धता :

- 6 ग्राम की बोलस डिब्बी के साथ

मिनफ्लुक सस्पेन्सन के रूप में भी उपलब्ध है

मिनफ्लुक सस्पेन्सन के प्रत्येक एम० एल० मे मिलता है	
ओक्सिकलोजेनाइड	3 %
लिवामिसोल	1.5 %

जब हम अपने पशुओं को मिनफ्लुक बोलस या सस्पेन्सन देते है तो पशु दो-तीन दिन तक पतला गोबर करता है । दो-तीन दिन बाद फिर से पशु अपने आप सामान्य गोबर करने लग जाऐगा । अतः पशु का पतला गोबर देखकर आपको घबराना नहीं है बल्कि पशु के गोबर को गौर से देखना है। जब आप गोबर को गौर से देखेगें तो आपको उसमें कीड़े नजर आऐगें । इसका तात्पर्य यह है कि आपके पशु के पेट के कीड़ों का सफाया हो गया है ।

खुराक :

- 1 एम० एल०, 3 किलोग्राम वजन के लिए

उपलब्धता : 30 एम० एल०, 100 एम० एल० व 1000 एम० एल०

मिनफ्लुक-डीएस : जिगर व पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए

फ़ेन्मैक्स बोलस

(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब आप अपने पशुओं को पेट के कीड़ों की दवा देने का विचार करते है तो आपको सोचना पड़ता है कि जो दवा हम दे रहे हैं वह कहीं गर्भ में पल रहे बच्चे को नुकसान तो नहीं करेगी। अब फ़ेन्मैक्स के रूप में आपके पास ऐसी दवा उपलब्ध है जो आप गाभिन पशुओं को भी दे सकते हैं। फ़ेन्मैक्स की प्रत्येक बोलस में है।

फेन्बन्डाजोल = 3 ग्राम

फ़ेन्मैक्स सभी प्रकार के गोल व चपटे कीडों की हर अवस्था (अण्डा, लारवा या बड़े कीड़े) पर असरकारक है।

खुराक :

- बड़ें पशुओं के लिए एक बोलस
- छोटे पशुओं के लिए चौथाई से आधी बोलस

उपलब्धता :

- 3 ग्राम की बोलस डिब्बी के साथ

फ़ेन्मैक्स : गाभिन पशुओं के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए

न्यूक्लियोटोन पॉउडर

(नई कोशिकाओं के निर्माण के लिए)

आजकल के व्यापारिक समय में पशुओं पर ज्यादा उत्पादन देने का दबाव बना हुआ है । उत्पादन के इस स्थाई दबाव के कारण पशुओं के लिए अपना स्वास्थ्य बनाए रखना भी एक चुनौती है। जो पशु इस चुनौती का सामना नहीं कर पाते वे या तो बीमार पड़ जाते हैं या फिर उनका उत्पादन कम हो जाता है ।

उदाहरण के तौर पर, आपने गौर किया होगा कि ज्यादा दूध देने वाले पशुओं में ही थनैला रोग होने की सम्भावना ज्यादा होती है। और एक बार थनैला रोग आ जाए तो फिर इससे पीछा छुड़ाना बड़ा मुश्किल होता है ।

जब भी पशु को किसी प्रकार का कोई इन्फैक्शन (बीमारी) होता है तो इन्फैक्शन के कारण वहाँ की कोशिकाएँ नष्ट हो जाती हैं। कोशिकाओं के नष्ट होने के कारण ही पशु को ठीक होने में ज्यादा समय लगता है। उदाहरण के तौर पर जिस भी थन में थनैला रोग हो जाता है तो इन्फैक्शन के कारण उस थन की कुछ कोशिकाएँ नष्ट हो जाती हैं और परिणामस्वरूप वह थन सिकुड़ कर छोटा हो जाता है । बहुत ज्यादा कोशिकाओं के नष्ट होने के कारण थन से दूध आना भी बन्द हो जाता है । देहात में कहते है कि यह थन मर गया ।

दूसरा, कई बार पशुओं के छोटे बच्चों को बहुत ज्यादा दस्त लग जाते हैं। दस्तों के कारण छोटे बच्चे बड़े कमजोर हो जाते हैं । दस्तों का मुख्यतः कारण होता है पेट में इन्फैक्शन का होना । इन्फैक्शन के कारण पेट की कुछ कोशिकाएँ नष्ट हो जाती हैं और परिणामस्वरूप बच्चों की हालत में देरी से सुधार होता है।

तीसरा, कई बार पशुओं को चोट लग जाती है और घाव बड़ी देरी से भरता है क्योंकि पशु के शरीर में जिस भी अंग पर घाव होगा वहाँ की कोशिकाएँ नष्ट हो जाती है और परिणामस्वरूप वहाँ पर स्थाई रूप से एक निशान पड़ जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब भी पशु को कोई इन्फैक्शन होगा तो वहाँ पर कोशिकाओं का नुकसान होगा ही होगा । अर्थात् वहाँ की कुछ न कुछ कोशिकाएँ तो अवश्य ही नष्ट होगी । जितनी जल्दी कोशिकाएँ फिर से बनेगी उतनी ही जल्दी बीमारी दूर होगी । बीमारी के दौरान नई कोशिकाओं के निर्माण के लिए न्यूक्लियोटोन पॉउडर खिलाना चाहिए ।

न्यूक्लियोटोन पॉउडर के प्रत्येक 200 ग्राम में मिलता है:

न्यूक्लियोटाइडस	20 ग्राम
बेसिलस सिटिलिस	50 बिलियन सीएफयू
प्रोटीन बेस	170 ग्राम

न्यूक्लियोटाइडस : यह नई कोशिकाओं के निर्माण को बढ़ाता है । उतको के नुकसान की जल्दी भरपाई करता है और घावों को जल्दी भरने में मदद करता है ।

बेसिलस सिटिलिस : यह प्रोबायोटिक है। यह पशुओं की आंतड़ियो को स्वस्थ बनाए रखती है। लाभदायक सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को बढ़ाती है। जिससे पशु का पाचन तंत्र सुचारु रुप से काम करता है तथा यह रोगों से लड़ने की क्षमता को भी बढ़ाती है ।

प्रोटीन बेस : यह भी नईं कोशिकाओं व उतको को बनाने में सहायक है।

सभी प्राणियों का शरीर छोटी-छोटी कोशिकाओं से बना है। प्रत्येक कोशिका प्लाजमा मेम्बरेन, साइटोप्लाजम व न्यूक्लियस से बनी होती है । न्यूक्लियस में डीएनए व हिस्टोन प्रोटिन होता है । न्यूक्लियोटाइडस डीएनए के निर्माण में सहायक होते हैं । इस प्रकार जब भी पशु को इन्फैक्शन, घाव या उत्पादन का दबाव हो तो आप 10 से 20 ग्राम न्यूक्लियोटोन पॉउडर अवश्य खिलायें ताकि आपके पशु में नई कोशिकाओं का निर्माण शुरू हो जाए और पशु जल्दी से ठीक हो जाए ।

कई बार आपने गौर किया होगा की ब्याने के तुरन्त बाद तनाव के कारण पशु बिलकुल भी दूध नहीं देता है । हमने लाख कौशिश की किन्तु दूध नहीं आया । इस प्रकार के मामलों में न्यूक्लियोटोन पॉउडर खिलाएँ और पशुओं से सफलता पूर्वक दूध प्राप्त करें ।

सुबह-शाम जब हम दूध निकालते हैं तो थन की कोशिकाओं का नुकसान होता है। दूध निकालने के कारण थन की कोशिकाओं के नुकसान की भरपाई के लिए न्यूक्लियोटोन पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिये ।

कई बार पशुओं के थन फटने लगते हैं । आपने काफी-कुछ किया लेकिन थन फटने बन्द नहीं हुए । कभी आपने थनो पर मलाई लगाई तो कभी मक्खन लगाया तो कभी कोई मलहम लगाई लेकिन थन फटने बन्द नहीं हुए । अब आपको थनो पर चिकनाई या अन्य कुछ भी लगाने की जरूरत नही है। केवल न्यूक्लियोटोन पॉउडर 20 ग्राम रोज़ाना 10 दिनों तक खिलाएँ और पशुओं के थन फटने से छुटकारा पायें ।

न्यूक्लियोटोन पॉउडर एक ऐसा प्रोडक्ट है जो पशु के प्रत्येक इलाज के साथ दिया जा सकता है। अगर आप किसी भी इलाज के साथ देगें तो यह उस इलाज के असर को प्रभावशाली तरीके से बढ़ा देता है । अतः बेहतर परिणाम के लिए इलाज के साथ-साथ न्यूक्लियोटोन पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिये ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में न्यूक्लियोटोन पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए :-

- थनैला रोग में ।
- बच्चेदानी में सूजन आने पर ।
- आंतड़ियो में सूजन आने पर ।
- छोटे बच्चों को दस्त लग जाने पर ।
- लगातार बहते हुए घावों को ठीक करने के लिए ।
- किसी सर्जरी व आप्रेशन के बाद ।
- किसी एक्सीडेंट में चोट लगने या घाव बनने पर
- सभी प्रकार की संक्रमित रोगों से प्रभावित हुए अंगो के उपचार के लिए ।

खुराक :

बड़े पशुओं में : 10 से 20 ग्राम दिन में एक बार

छोटे पशुओं में : 5 से 10 ग्राम दिन में एक बार

उपल्बधता : 200 ग्राम

न्यूक्लियोटोन पॉउडर : बेहतर इलाज के लिए

पुबरएड पॉउडर

(बछड़ा / बछिया को जल्दी तैयार करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पुबरएड दो शब्दों के मिलाप से बना है। **PUBERTY** (पुबरटी) + AID (एड) । पुबरटी कहते है यौवन को और एड का अर्थ होता है सहायता करना अर्थात् जो पशुओं के छोटे बच्चों में यौवन (जवानी) लाने में मदद करे उसे पुबरएड कहते हैं । पुबरटी अर्थात् यौवन वह अवस्था होती है जब नर पशु उपजाऊ शुक्राणु तथा मादा पशु उपजाऊ अण्डा पैदा करने के लायक हो जाए । बोलचाल की भाषा में पुबरटी वह अवस्था होती है जब नर या मादा पशु बच्चे पैदा करने के लायक हो जाए । छोटे बच्चों को जल्दी यौवन प्राप्त करवाने के लिए पुबरएड पॉउडर का इस्तेमाल करना चाहिए ।

पुबरएड पॉउडर के प्रत्येक 1 कि० ग्रा० में मिलता है :

डाइकैल्शियम फास्फेट	=	300 ग्राम
जिंक विद अमाइनो एसिड चिलेटस	=	8 ग्राम
मैगनीज विद अमाइनो एसिड चिलेटस	=	3.5 ग्राम
कॉपर विद अमाइनो एसिड चिलेटस	=	0.8 ग्राम
विटामिन ए	=	10,00,000 आई.यू.
विटामिन डी-3	=	2,00,000 आई.यू.
विटामिन ई	=	800 आई.यू.
फरमेन्टिड ईस्ट कल्चर (ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी एसिड के साथ)	=	60 ग्राम
कुरकुमा लोंगा (हल्दी)	=	25 ग्राम
बेस	=	पर्याप्त मात्रा

डाईकैल्शियम फास्फेट : इसमें मौजूद कैल्शियम हडिड्यों तथा शरीरिक ढ़ाँचे का विकास करता है । मिल्क फीवर की सम्भावना को कम करता है । मांसपेशियों की कार्यप्रणाली को सुचारू रखता है । गर्भकाल व उसके बाद होने वाली समस्याओं जैसे पशु द्वारा ज़ेर न गिराना, पशु द्वारा शरीर दिखाना तथा ब्याहने के बाद जनन अंगों का देरी से अपने स्थान पर वापस आने की सम्भावना को कम कर देता है । इसमें मौजूद फास्फोरस ओवरी को प्रभावित करता है, जिससे पशु की गर्भधारण करने की क्षमता बढ़ जाती है । और फास्फोरस की कमी के कारण होने वाली समस्याऐं जैसे कि पाइका, डाउनर काऊ सिंड्रोम तथा पशुओं के पेशाब में खून आना आदि समाप्त हो जाती हैं ।

जिंक विद अमाइनो एसिड चिलेटस : यह अण्डकोश को विकसित करता है तथा शुक्राणुओं के उत्पादन को बढ़ाता है। यह नर पशुओं में सैक्स करने की इच्छा/ उत्तेजना को बढ़ाता है । प्रजनन से सम्बन्धित सभी घटनाएँ सुचारू रुप से होती है तथा त्वचा से सम्बन्धित रोग जैसे कि पैराकैरेटोसिस की रोकथाम करता है ।

मैगनीज विद अमाइनो एसिड चिलेटस : मैगनीज स्टीरोआइडस हारमोनस जैसे इस्ट्रोजन, परोजेस्टीरोन तथा टेस्टोस्टीरोन के बनाने में मदद करता है, जो नर पशुओं में शुक्राणुओं का निर्माण करते हैं तथा मादा पशुओं में हीट चक्र को सामान्य रखते हैं ।

कॉपर विद अमाइनो एसिड चिलेटस : कॉपर पशुओं में खून बनाने में सहायक है तथा पशुओं की चमड़ी व बालों के रंग को सामान्य बनाए रखता है ।

विटामिन ए : यह एंटीइन्फैक्टीव विटामिन है अर्थात् यह बीमारी फैलने से रोकता है। यह शुक्राणुओं को बनाने मे सहायक है और नर पशुओं में सैक्स करने की इच्छा को बनाये रखता है ।

विटामिन डी-3 : यह कैल्शियम व फास्फोरस के अवशोषित होने में सहायक है ।

विटामिन ई : यह एंटीआक्सीडैंट है तथा एंटीस्टरलिटी विटामिन है । पशुओं में बांझपन नहीं आने देता ।

फरमेन्टिड ईस्ट कल्चर (ओमेगा 3 व ओमेगा 6 फैटी एसिड के साथ) : फरमेन्टिड ईस्ट कल्चर पशुओं के पाचन तन्त्र को सुचारू रूप से चलाने में मदद करती है । ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी एसिडस LH हारमोन के स्तर को बढ़ा देते हैं । LH हारमोन ओवरी पर बनने वाले फोलिकल को विकसित करके अण्डा निकालने में मदद करता है जिसके, परिणामस्वरूप, पशु हीट में आ जाता है ।

कुरकुमा लोंगा (हल्दी) : यह इम्यूनोमोडुलेटर (रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले), एंटीइनफलेमेटरी (सूजन कम करने वाली), एंटीमाईक्रोबियल (हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं से बचाव करने वाली) तथा एंटीआक्सीडैंट का काम करती है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में पुबरऐड पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए :-

जब नर व मादा पशुओं में यौवन व यौन परिपक्वता देरी से आए :

पशुपालक मित्रों, कई बार आपकी बछिया / कटिया 3-4 साल की हो जाती है लेकिन फिर भी वह हीट में नहीं आती है। ठीक इसी प्रकार कई बार आपका बछड़ा / कटड़ा 3-4 साल का हो जाता है फिर भी वह सर्विस देने के लायक नहीं हो पाता है। इन दिनों परिस्थितियों को यौवन/जवानी देरी से आई, कहा जाऐगा। इन दोनों ही परिस्थितियों में पुबरऐड पॉउडर 40 ग्राम प्रतिदिन खिलायें ताकि बछिया/कटिया हीट में आ जाए तथा बछड़ा / कटड़ा सर्विस देने के लायक हो जाए।

कई बार जब आपकी बछिया/कटिया हीट में आती है तो आप उसे कृत्रिम गर्भाधान द्वारा नए दूध करवाते हैं। कृत्रिम गर्भाधान करते समय डॉक्टर साहब कहते हैं कि ए०आई० गन पास करने में दिक्कत आ रही है। इसका तात्पर्य यह है कि अभी बछिया/कटिया के जनन अंग पूरी तरह से विकसित नहीं हुए हैं, इसलिए डॉक्टर साहब को ए०आई० गन पास करने में दिक्कत आ रही है। इस तरह की बछिया/कटिया को तुरन्त पुबरऐड पॉउडर 40 ग्राम रोज़ाना के हिसाब से खिलाएँ ताकि उसके जननांग पूरी तरह से विकसित हो जाए और अगली बार ए०आई० करते समय डाक्टर साहब को कोई दिक्कत न आए तथा प्रसव के दौरान पशु को कोई कठिनाई न आए।

जब नर पशुओं का जोश ठण्डा पड़ जाए :

लगातार सर्विस देने के कारण साण्ड/झोटा का जोश ठण्डा हो जाता है जिसके कारण वे सर्विस नहीं देते और पीछे हटने लगते है। साण्ड/झोटा का जोश फिर से प्राप्त करने के लिए उन्हें 40 ग्राम पुबरऐड रोज़ाना खिलायें ताकि वे नए जोश के साथ सर्विस देने लग जाए। अगर आप साण्ड/झोटा को नियमित रूप से पुबरऐड पाउडर खिला रहे हैं तो उनका जोश ठण्डा पड़ेगा ही नहीं।

जब नर या मादा बच्चों के शारीरिक विकास व शारीरिक वजन में कमी रह जाए :

कई बार बछिया डेढ़-दो साल की हो जाती है लेकिन देखने में वह 5-6 महीने की ही लगती है। इसका तात्पर्य यह है कि उम्र के अनुपात में उसका शारीरिक विकास नहीं हुआ है। ऐसी बछिया को तुरन्त 40 ग्राम रोज़ाना के हिसाब से पुबरऐड पॉउडर खिलाएँ ताकि उम्र के अनुपात में बछिया की कद-काठी (शारीरिक विकास) हो जाए और उसकी प्रजनन क्षमता बढ़ जाए। ठीक इसी प्रकार बछड़ा डेढ़-दो साल का हो जाता है लेकिन देखने में वह 5-6 महीने का ही लगता है। इस प्रकार के बछड़े को तुरन्त 40 ग्राम रोजाना के हिसाब से पुबरऐड पॉउडर खिलाएँ ताकि उम्र के अनुपात में बछड़े की कद-काठी (शरीर विकसित) हो जाए और वह समय से सर्विस

देने के लायक हो जाए।

कई बार पशुओं के बच्चों की कद-काठी तो बढ़िया होती है लेकिन कद-काठी के अनुसार उनका शरीर हल्का रह जाता है। अर्थात् कद-काठी के अनुपात में शरीर का वजन कम होता है। ऐसे बच्चों को तुरन्त पुबरऐड पॉउडर खिलायें ताकि कद-काठी के अनुपात में शारीरिक वजन हो जाए और उनका शरीर गठीला दिखाई देने लग जाए।

पशुपालक मित्रों, अब बात आती है कि पुबरऐड पॉउडर बच्चों को कब से खिलाना शुरु करना चाहिए ? तीन महीने या उससे बड़े बच्चों को पुबरऐड पॉउडर शुरु कर सकते है। ऐसा करने पर हमारे पशुओं के बच्चों की बड़ी अच्छी कद-काठी बन जाएगी व उनका शरीरिक वजन भी बहुत अच्छा हो जाऐगा जिससे उनमें यौवन व यौन परिपक्वता 18 से 20 महीने की उम्र में ही आ जाऐगी। और पशुओं के बच्चे आपके लिए जल्दी ही फलदायक हो जाऐगें। इस प्रकार पशुओं के बच्चों से ज्यादा लाभ प्राप्त करने के लिए उन्हें पुबरऐड पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए।

खुराक : बछिया / कटिया : 40 ग्राम रोज़ाना

बछड़ा / कटड़ा : 40 ग्राम रोज़ाना

उपलब्धता : 1 किलोग्राम, 2.5 किलोग्राम व 5 किलोग्राम

पुबरऐड पॉउडर- यौवन व यौन परिपक्वता लाने के लिए

इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस

(हीट में लाने के लिए)

पशुपालक मित्रों, इस्ट्रस कहते है हीट को, हर्ब का शब्दिक अर्थ होता है जड़ी-बूटियाँ तथा "एम" का तात्पर्य है मिनरल्स। इस प्रकार इस्ट्रोहर्ब-एम का अर्थ हुआ मिनरल्स व जड़ी-बूटियों के मेल से बना एक ऐसा प्रोडक्ट जो पशु को हीट में लेकर आता है। इस्ट्रोहर्ब-एम के पैक में कुल सात बोलस होती है। छः बोलस ग्लाइसिन चिलेटिड मिनरल्स की व एक बोलस हर्ब्स की। मिनरल्स की प्रत्येक बोलस में ग्लाइसिन चिलेटिड मिनरल्स इस प्रकार मिलते है :

आयोडिन	150 मिलीग्राम
ज़िंक	600 मिलीग्राम
मैंगनीज	600 मिलीग्राम
कॉपर	1500 मिलीग्राम
क्रोमियम	10 मिलीग्राम
कोबाल्ट	120 मिलीग्राम
सेलेनियम	08 मिलीग्राम
आयरन	1500 मिलीग्राम
मैग्निशियम	350 मिलीग्राम

हरे रंग की बोलस जड़ी-बूटियों से निर्मित है। इस हरे रंग की बोलस में हीराबोल, शतावरी, कुमारी, यष्टिमधु, उलटकंबल, गोखरु, तगर, सिंघाडा, लोध्र व अशोका नाम की जड़ी-बूटियाँ होती है।

हीराबोल : यह अनियमित इस्ट्रस चक्र को नियमित करती है और गर्भाशय के लिए एक ताकतवर औषधि है।

शतावरी : यह इस्ट्रोजन हारमोन के प्रभाव को बढ़ाकर पशु को हीट में लाने का काम करती है।

कुमारी : यह इस्ट्रोजन हारमोन के प्रभाव को बढ़ाती है।

यष्टिमधु : यह सूजन को दूर करती है।

उलटकंबल : यह इस्ट्रोजन हारमोन के प्रभाव को बढ़ाती है।

गोखरु : यह जनन अंगो को बीमारी से बचाती है। मूत्र रोग में उपयोगी है तथा इस्ट्रोजन हारमोन की गतिविधि को बढ़ाती है।

तगर : यह ओवरी को प्रभावित करती है और गर्भाशय के लिए एक ताकतवर औषधि का काम करती है।

सिंघाडा : यह गर्भाशय की अनियमितताओं को दूर करती है।

लोध्र : यह हीट को नियमित करती है और इस्ट्रोजन हारमोन के प्रभाव को बढ़ाती है।

अशोका : यह गर्भाशय को सुचारु रूप से काम पर लगाती है और गर्भाशय के विकारों को दूर करती है।

इस प्रकार इस्ट्रोहर्ब-एम पशुओं में खनिज तत्वों की पूर्ति करके व जनन अंगो को प्रभावित करके पशुओं को हीट में लाने का काम करती है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस का इस्तेमाल करना चाहिए :

जब पशु नियमित समय पर हीट में ना आए : -

एक अच्छी गाय या भैंस वह है जो हर साल एक बच्चा दें। हर साल एक बच्चा प्राप्त करने के लिए भैंस को ब्याने के बाद 60 दिन में तथा गाय को ब्याने के बाद 90 दिन में हीट में आ जाना चाहिए। भैंस से हर साल एक बच्चा लेना थोड़ा मुश्किल है। क्योंकि भैंस का गर्भकाल, गाय के गर्भकाल से एक महीना ज्यादा होता है। अतः भैंस से हर साल एक बच्चा प्राप्त करने के लिए इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि आपको ज्यादा ब्याँत का दूध और ज्यादा बच्चे मिल सकें।

जब पशु हीट में आने पर भी पुकारता ना हो :-

कई बार पशु हीट के लक्षण तो दिखाने लगता है जैसे तार देना या किसी दूसरे पशु पर कूदना लेकिन वह पुकारता नहीं है। इसे विज्ञान की भाषा में साइलेन्ट हीट करते है। अतः पशुओं में साइलेन्ट हीट की समस्या को दूर करने के लिए इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस का इस्तेमाल करना चाहिए।

जब पशु के हीट में आने पर भी अण्डा ना निकलता हो :-

पशुओं के बार-बार गाभिन होने का एक कारण यह भी है कि जब वे हीट में आते हैं तो किसी कारण से अण्डा नहीं निकल पाता है। अतः जब पशु हीट में आने पर अण्डा ना निकाले तो उन्हें तुरन्त इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस खिलानी चाहिए ताकि पशु के हीट में आने पर अण्डा निकल सकें।

जब पशु गर्भाशय में बीमारी के बाद हीट में ना आए :-

जब पशु के गर्भाशय में इन्फैक्शन/बीमारी हो जाती है तो आप लोग गर्भाशय की सफाई करवाते है। इससे गर्भाशय की बीमारी तो दूर हो जाती है लेकिन बीमारी की वजह से गर्भाशय की जो काम करने की क्षमता प्रभावित हुई है उसके कारण पशु हीट में नहीं आता। अतः बीमारी के बाद गर्भाशय की कार्यप्रणाली को सुचारु करने के लिए इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि पशु अपने नियमित हीट चक्र को प्राप्त कर सकें।

इस्ट्रोहर्ब-एम खिलाने का तरीका :-

इस्ट्रोहर्ब-एम में कुल सात बोलस होती है। पहली छः मैटमैले रंग की तथा सातवीं हरे रंग की। पहले छः दिन एक बोलस रोज़ाना मैटमैले रंग की खिलाएँ तथा सातवें दिन हरे रंग की बोलस खिलाएँ।

उपलब्धता : एक डिब्बी में सात बोलस

इस्ट्रोहर्ब-एम बोलस : पशुओं की प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए मिनरल्स व हर्ब्स का मेल

टोक्साउट पॉउडर

(दाना-चारा में उपस्थित फफूंद को बाहर निकालने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पशुओं में वर्तमान समय में आने वाली मुख्य समस्याएँ इस प्रकार है :-

- पशुओं की प्रजनन क्षमता में कमी आ जाती है। जैसे :-
  - पशु 21 दिन में हीट मे न आकर अनियमित रूप से हीट मे आता है।
  - पशु हीट में काफी कम समय तक रहता है।
  - पशु हीट में काफी लम्बे समय तक रहता है।
  - गर्भ मे पल रहे बच्चे की मृत्यु हो जाती है तथा गाभिन पशु भी हीट के लक्षण दिखाने लगता है।
  - पशुओं की गर्भ धारण करने की क्षमता में कमी आ जाती है।
- पशुओं की खुराक कम हो जाती है।
- पशुओं को रुक-2 कर खूनी दस्त लग जाते हैं या पशु लगातार पतला गोबर करता रहता है।
- पशुओं की चमड़ी व बालों मे खुरदरापन आ जाता है।
- पशुओं पर किसी भी इलाज का कोई असर नहीं होता तथा पशु बार-बार थनैला रोग का शिकार होता रहता है।
- पशुओं का दूध कुछ जमा जमा सा रहता है।

उपरोक्त सभी समस्याओं का कारण है आपके पशुओं के दाने-चारे में फफूंद का उपस्थित होना। देहात में पशुओं के लिए दाना व चारा स्टोर करके रखने की परम्परा है। विशेषकर गेहूँ का तूड़ा या ज्वार-बाजरा की कड़वी। गेहूँ का तूड़ा तो लगभग सालभर का स्टोर करके रखा जाता है। जब भी कोई वस्तु स्टोर करके रखी जाती है तो उसमें नमी के कारण फफूंद लग जाती है। उदाहरण के तौर पर अगर हम अचार को काफी दिनों तक न सम्भालें तो उस पर एक मटमैली रंग की परत जम जाती है। यह मटमैली रंग की परत और कुछ नहीं बल्कि फफूंद होती है।

फफूंद के कारण पशुओं को जो बीमारी होती है उसे माइकोसिस कहते है तथा फफूंद जो विषैलापन/ /जहरीलापन पैदा करती है उसे माइकोटोक्सिन कहते है । जब पशु माइकोटोक्सिन से युक्त दाना-चारा खा लेता है तो पशु के शरीर में एक विकार उत्पन्न हो जाता है जिसे माइकोटोक्सिकोसिस कहते है । माइकोटोक्सिकोसिस के कारण ही उपरोक्त समस्याएं आती है ।

उपरोक्त सभी समस्याओं को दूर करने के लिए टोक्साउट पॉउडर का इस्तेमाल करना चाहिए । टोक्साउट पॉउडर नीम लीफ एक्सट्रेक्ट (नीम के पत्तों का रस), सोडियम फोरमेट, फाइलोसिलिकेटस व एक्टीवेटिड चारकोल का मिश्रण है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में टोक्साउट पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए :-

एफलाटोक्सिकोसिस : जब पशु को फफूंद युक्त दाना-चारा खिलाया जाता है तो फफूंद पशु के पेट में जाकर अपना जहरीलापन दिखाती है जिससे पशु का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है क्योंकि फफूंद पशु के पाचन तन्त्र में अपना स्थाई डेरा बना लेती है जिससे पशु का स्वास्थ्य व उत्पादन दोनों ही बिगड़ जाते हैं। जब आपके पास गेहूँ का तूड़ा खत्म हो जाता है तो आप अपने पशुओं को धान की पराली खिलाते हैं । धान की फसल क्योंकि काफी समय से पानी में खड़ी रहती है इसलिए धान की पराली पर फफूंद लगने की ज्यादा सम्भावना होती है । अतः धान की पराली के साथ टोक्साउट पाउडर अवश्य खिलाना चाहिए ताकि पराली पर अगर फफूंद हो तो उसका दुष्प्रभाव कम हो जाए और पशु का स्वास्थ्य व उत्पादन दोनों ही सही सलामत रहें ।

जब पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाए : जब पशु को फफूंद युक्त दाना-चारा खिलाया जाता है तो फफूंद पाचन तन्त्र में अपना एक स्थाई डेरा बना लेती है । जिसके कारण पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है ।

जब पशुओं के दूध की गुणवत्ता में कमी आ जाए : फफूंद युक्त दाना-चारा खाने से पशुओं के दूध की गुणवत्ता में कमी आ जाती है क्योंकि फफूंद कई प्रकार के विषैलापन छोड़ती है जिसमें से एक एफलाटोक्सिन एम 1(AFM1), दूध में आने लगता है, जिससे दूध की गुणवत्ता में कमी आ जाती है । AFM1 के कारण दूध की दही भी अच्छी तरह से नहीं जमती तथा मक्खन भी कम निकलता है । AFM1 दूध पीने के कारण हमारे बच्चों की बढ़ोतरी भी कम होती है ।

जब पशुओं पर किसी भी इलाज का पूरा असर न हो : कई बार पशुओं को बार-बार थनैला रोग होता है । कुछ पशु लगातार पतला गोबर करते रहते हैं । कुछ पशुओं के पेशाब में लगातार खुन आता रहता है । कई बार ब्याने के तुरन्त बाद पशु दूध से नहीं चलते । कुछ पशुओं की सेहत लगातार गिरती रहती है । कई पशु लाख कोशिशों के बावजूद भी बार-बार गाभिन होते रहते हैं । जब आपका सामना इस प्रकार की समस्याओं से हो तब आपको तुरन्त अपने पशुओं के दाने-चारे की जाँच करवानी चाहिए क्योंकि इस बात की पूरी सम्भावना है कि आप अपने पशुओं को फफूंद युक्त दाना-चारा खिला रहे हैं ।

फफूंद के कारण ही आपके पशु पर इलाज का असर नहीं हो रहा है । जब तक फफूंद बाहर नहीं निकलेगा तब तक आपके पशु पर इलाज का कोई असर नहीं होगा । अतः जब आपको लगे कि आपकी कोशिशों का कोई असर नहीं हो रहा है तब एक आखिरी कोशिश टोक्साउट पाउडर के साथ करनी चाहिए ताकि आपके पशु पर इलाज का पूरा असर हो जाए ।

खुराक :

- बड़े पशुओं में : 50 ग्राम दिन मे एक बार ।
- छोटे पशुओं में : 25 ग्राम दिन मे एक बार ।

  एक टन फीड में 1.5 - 2.0 किलोग्राम

  टोक्साउट पॉउडर मिलाना है ।

उपलब्धता : 1 किलोग्राम व 25 किलोग्राम

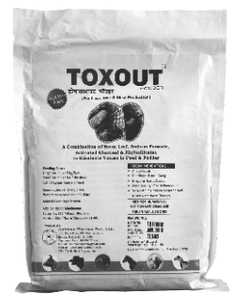

टोक्साउट पॉउडर : दाना-चारे में उपस्थित फफूंद को बाहर निकालने के लिए

पशुओं को नए दूध करवाने के तुरन्त बाद ठण्डा टीका नहीं लगवाना चाहिए

कई पशुपालक अपने पशुओं को नए दूध करवाने के तुरन्त बाद ठण्डा टीका (प्रोजस्टिरोन हारमोन) लगवाते है । ठण्डा टीका लगवाने के बाद ज्यादातर पशु खराब हो जाते हैं, और फिर ऐसे पशु 5-6 महीनों तक हीट में नहीं आते । आइए, सबसे पहले आपको पशु के हीट में आने की प्रक्रिया को वैज्ञानिक तरीके से समझाते हैं ।

जब पशु को हीट में आना होता है, तो सबसे पहले पशु की हाइपोथलेमस से GnRH हारमोन बनता है। GnRH हारमोन अपना असर एनटिरियर पिच्यूयटरी पर दिखाता है, जिससे पिच्यूटरी ग्लैण्ड से FSH और LH हारमोन बनते हैं । FSH हारमोन, जैसा इसका नाम वैसा इसका काम। FSH अर्थात् फोलिकल स्टिमुलेटिंग हारमोन । FSH का काम ओवरी पर एक फोलिकल बनाना और ओवरी से इस्ट्रोजन हारमोन बनाना होता है। LH हारमोन फोलिकल को विकसित करके उससे अण्डा निकालने का काम करता है और परिणामस्वरूप पशु हीट में आ जाता है, और तार दिखाने लगता है । जिस जगह पर फोलिकल बना था उसी जगह पर CL (कारपस ल्यूटियम) बनाने में भी LH हारमोन का योगदान होता है। CL में ही प्रोजस्टिरोन हारमोन बनाता है और, परिणामस्वरूप, पशु गर्भ धारण किए रहता है तथा अपना गर्भकाल पूरा करता है।

ओवरी में इस्ट्रोजन हारमोन बनता है और इस्ट्रोजन हारमोन के प्रभाव के कारण ही पशु हीट में आता है । इस्ट्रोजन हारमोन को वैज्ञानिक ऑलराउण्डर हारमोन भी कहते हैं, क्योंकि यह एक साथ कई जननांगों को प्रभावित करता है। जब इस्ट्रोजन हारमोन दिमाग पर असर डालता है तो पशु के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है अर्थात् हीट में आने के कारण पशु पुकारने लगता है या दूसरे पशु के ऊपर चढ़ने लगता है ।

जब इस्ट्रोजन हारमोन एनटिरियर पिच्यूयटरी पर अपना प्रभाव डालता है तो FSH और LH हारमोन बनने लगते हैं। जब इस्ट्रोजन हारमोन का प्रभाव फलोपियन ट्यूब, बच्चेदानी, सरविक्स, और वजाइना पर होता है तो इन जननांगों से एक तरल पदार्थ निकलता है। यह तरल पदार्थ अण्डे को फलोपियन ट्यूब तक तथा शुक्राणुओं की वजाइना से लेकर फलोपियन ट्यूब तक की यात्रा करने में मदद करता है, जिसके परिणामस्वरूप फलोपियन ट्यूब में अण्डे और शुक्राणुओं का मिलन होता है और एक नया जीव बन जाता है।

पशुपालक मित्रों, अब आप यह बात जान चुके हैं कि इस्ट्रोजन हारमोन के प्रभाव के कारण ही पशु हीट में आता है तथा इस्ट्रोजन हारमोन कई अंगों को प्रभावित करता है। अब हमें यह नहीं पता कि पशु में इस्ट्रोजन हारमोन का असर कब तक रहेगा क्योंकि कोई पशु 12 घण्टे में हीट तोड़ देता है तो कोई-कोई 36 घण्टे तक भी हीट में रहता है । ऊपर से हम

प्रोजस्टिरोन हारमोन का टीका लगवा देते हैं। इस्ट्रोजन और प्रोजस्टिरोन हारमोन का प्रभाव एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है अर्थात् इस्ट्रोजन हारमोन पशु को हीट में लाता है तो प्रोजस्टिरोन हारमोन गर्भ को बनाए रखता है। अगर आपने इस्ट्रोजन हारमोन का प्रभाव समाप्त होने से पहले प्रोजस्टिरोन हारमोन का टीका लगवा दिया, तो पशु में हारमोन का सन्तुलन बिगड़ना ही बिगड़ना है । और इस प्रकार इस हारमोन के सन्तुलन को ठीक होने में 5-6 महीने का समय लग जाता है।

आप प्रोजस्टिरोन हारमोन का जो टीका लगवाते हैं, वह प्रोजस्टिरोन हारमोन 2-5 दिन बाद तो CL से बनना ही बनना है तो फिर क्यों हम बेकार में पैसे भी खर्च करें और पशु के खराब होने का खतरा भी मोल लें ?

इम्पैक्योर पॉउडर

(कब्ज व गोबर के बन्ध को खोलने के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब भी आपके पशु को कब्ज या गोबर के बन्ध की शिकायत हो तो उसे तुरन्त इम्पैक्योर पॉउडर खिलाना चाहिए। इम्पैक्योर पॉउडर के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता है :-

कलाबोल	5 ग्राम
अश्वगोल	20 ग्राम
हरितकी	30 ग्राम
स्वर्णपत्री	15 ग्राम
अम्लकी	30 ग्राम

इम्पैक्योर पॉउडर में डाली गई जड़ी-बूटियों का काम :-

कलाबोल : इस जड़ी-बूटी में अलाइन नामक ग्लाइकोसाइड प्रभावशाली होता है। कलाबोल की कम खुराक दस्त लगाने में सहायक होती है। कालाबोल पेट के कीड़ों का सफ़ाया भी करती है। यह लीवर व स्पलिन को प्रभावित करके पाचन क्रिया के दौरान ज्यादा रस बनाने में सहायता करती है जिसके परिणामस्वरूप कब्ज व गोबर का बन्ध दूर हो जाते हैं।

अश्वगोल : इसमें काफी मात्रा में गोन्द (लगभग 30%) होता है। यह गोन्द आन्तड़ियों में हलचल पैदा करके, पशु के पेट में एकत्रित दाना-चारा को बाहर निकालने में पशु की मदद करती है। यह पाचन तन्त्र को मुलायम बना देती है। इस कारण पशु द्वारा खाया हुआ दाना-चारा आसानी से इधर-उधर हो जाता है। अश्वगोल आन्त के द्वार पर एक सुरक्षा कवच बना देती है, जिससे पशु को जलन नहीं होती तथा हानिकारक बैक्टिरिया भी नहीं पनपने पाते।

हरितकी : यह दस्तावर व थोड़ी पेट साफ करने वाली जड़ी-बूटी है। यह पाचन क्रिया को सुधारती है तथा पेट में गैस जमा होने से रोकती है यह गोबर का बन्ध होने से रोकती व दूर करती है। इसमें चेबुलिनिक एसिड, चेबुलेजिक एसिड व कोरीलेजिन प्रभावशाली होते हैं।

स्वर्णपत्री : सेनोसाइड अ व सेनोइड ब नामक ग्लाइकोसाइड के कारण यह दस्तावर का काम करती है। यह लीवर पर

प्रभावशाली है जिससे बाइल और पाचन रस ज्यादा बनते हैं। ज्यादा रस बनने के कारण पाचन क्रिया में सुधार होता है और पाचन तन्त्र में हलचल बढ़ जाती है।

अम्लकी : यह पाचन तन्त्र के अम्लीय वातावरण को दूर करके पाचन क्रिया में सहयोग करती है। अम्लकी की ज्यादा खुराक आन्तड़ियों में हलचल को बढ़ाने में सहायक होती है। इस जड़ी-बूटी में गालिक एसिड व इगालिक एसिड प्रभावशाली होते हैं।

निम्नलिखित परिस्थितियों में इम्पैक्योर पॉउडर का इस्तेमाल करना चाहिए :

- जब पशु को कब्ज की शिकायत हो।
- जब पशु को गोबर का बन्ध पड़ जाए।
- जब पशु को अफारा आ जाए।
- जब पशु को पाचन तन्त्र से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की कोई परेशानी हो तो दस्तावर के रूप में या पेट साफ़ करने के रूप में इम्पैक्योर पॉउडर का इस्तेमाल करना चाहिए।

खुराक :
छोटे पशुओं में : 25-50 ग्राम दिन में दो बार
बड़े पशुओं में : 50-100 ग्राम दिन में दो बार

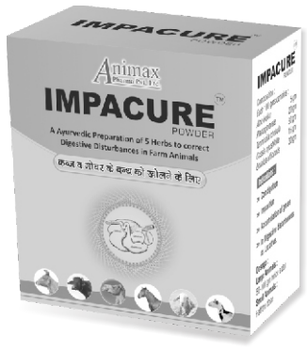

उपलब्धता : 100 ग्राम

इम्पैक्योर : पेट साफ़ करने के लिए

माइक्रोटोन

(छोटे बच्चों को ताकत प्रदान करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, अपने देश में पशुओं के छोटे बच्चों की मृत्यु दर बहुत ज्यादा है। इसके निम्नलिखित कारण है :

1) **माइक्रोफ्लोरा की कमी :** पशुओं के छोटे बच्चों में लाभकारी सुक्ष्म जीवाणु ज्यादा विकसित नहीं होते अतः वे दाना-चारा हजम करने में 20-25 दिन का समय लेते है । अगर किसी वजह से माइक्रोफ्लोरा पर तनाव आ जाए तो छोटे बच्चे कमज़ोर रह जाते हैं ।

2) **कम दूध पिलाना :** पशुओं के छोटे बच्चों को 20-25 दिनों तक पर्याप्त मात्रा में दूध पिलाना चाहिए क्योंकि शुरू-शुरू में दूध ही छोटे बच्चों का मुख्य आहार होता है ।

3) **पेट के कीड़े :** पशुओं के छोटे बच्चों को नियमित रूप से पेट के कीड़ों की दवा देनी चाहिए। अगर हम उन्हें पेट के कीड़ों की दवा नहीं देगें तो वे काफी कमजोर हो जाऐंगे । अगर कमजोर बच्चों को पेट के कीड़ों की दवा दी जाती है तो ऐसे बच्चे पेट के कीड़ों को गोबर के रास्ते बाहर नहीं निकाल पाते और परिणामस्वरूप मरे हुए पेट के कीड़े पेट में ही रह जाते है । मरे हुए पेट के कीड़े पेट के अन्दर जहरीला पदार्थ फैला देते है जिसके कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। ऐसा विशेष रुप से सर्दियों में बहुत होता है।

पशुओं के छोटे बच्चों को माइक्रोटोन अवश्य पिलाना चाहिए ताकि उनमें कुछ ताकत आ जाए ।

माइक्रोटोन के प्रत्येक 5 एम.एल. में मिलता है :

विटामिन बी$_2$	=	1.25 मि.ग्रा.
विटामिन बी$_6$	=	0.62 मि.ग्रा.
विटामिन बी$_{12}$	=	6.25 मि.ग्रा.
डी-पेन्थीनोल	=	0.65 मि.ग्रा.
निकोटिनामाइड	=	18.75 मि.ग्रा.
कोलिन क्लोराइड	=	10 मि.ग्रा.
एल लाइसिन मोनो हाइड्रोक्लोराइड	=	10 मि.ग्रा.

निम्नलिखित परिस्थितियों में माइक्रोटोन का इस्तेमाल करना चाहिए :

1) **छोटे बच्चों में कम विकसित माइक्रोफ्लोरा को विकसित करने के लिए :**
जुगाली करने वाले पशुओं में फरमनटेसन की प्रक्रिया के बाद बी-कॉम्पलेक्स बनता है, जिससे पशुओं को ताकत मिलती है। जुगली करने वाले पशुओं के छोटे बच्चों का माइक्रोफ्लोरा ज्यादा विकसित नहीं होता। इसलिए बी-कॉम्पलेक्स भी कम बनता है । अतः छोटे बच्चों को ताकत प्रदान करने के लिए माइक्रोटोन अवश्य पिलाना चाहिए ताकि छोटे बच्चों का माइक्रोफ्लोरा विकसित हो जाए ।

2) **छोटे बच्चों को पेट के कीड़ों की दवा देने के बाद :**
पशुओं के छोटे बच्चों का माइक्रोफ्लोरा ज्यादा विकसित नहीं होता । ऊपर से हमने पेट की कीड़ों की दवा देकर माइक्रोफ्लोरा को और भी तनाव दे दिया । अतः छोटे बच्चों को पेट के कीड़ों की दवा देने के तुरन्त बाद माइक्रोटोन अवश्य पिलाना चाहिए ताकि कम विकसित माइक्रोफ्लोरा का तनाव कम हो जाए ।

3) **छोटे बच्चों में वजन बढ़ाने मे लिए :**
अगर पशुपालक नियमित रूप से अपने पशुओं के छोटे बच्चों को माइक्रोटोन पिलायेगें तो उनके बच्चे स्वस्थ रहेगें तथा उनके यहाँ छोटे बच्चों की मृत्यु दर समाप्त हो जाऐगी ।

खुराक :
छोटे बच्चों में : 10-20 एम. एल.
बड़े पशुओं में : 50 एम. एल.

उपलब्धता :
500 एम. एल., 1000 एम. एल. व 5 लीटर

सिमलेज हर्ब्स बोलस

(दूध उतारने के लिए)

पशुओं में दूध उतारने की प्रक्रिया पाँच चरणों में पूरी होती है ।

1) पशुओं को दूध उतारने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।
2) प्रोत्साहन मिलने के बाद पशु के दिमाग तक सन्देश जाता है।
3) सन्देश मिलने के बाद दिमाग से ऑक्सीटोसिन हारमोन पैदा होता है ।
4) ऑक्सीटोसिन हारमोन मायोएपिथिलियल कोशिकाओं को प्रभावित करता है ।
5) पशु का दूध उतर जाता है ।

दूध निकालने की प्रक्रिया पशु को दूध देने के लिए प्रोत्साहित करने से शुरु होती है । जब हम दूध निकालने की तैयारी करते हैं तो कुछ तो पशु हमारी तैयारी देखकर ही अन्दाजा लगा लेता है कि अब दूध देने का समय हो गया है । इसके अलावा पशु को दूध उतारने के लिए कई तरह से प्रोत्साहन मिल सकता है । कुछ पशुओं को यह प्रोत्साहन बच्चे को देखने से या बच्चे को दूध पिलाने से मिलता है । कुछ पशुओं को दूध निकालने से पहले चाट डालने से मिलता है । कुछ पशुओं को दूध निकालने से पहले थनों को मालिश करने से या लेवटी को धोने से मिलता है ।

एक बार जब पशु को उसकी आशा के अनुसार प्रोत्साहन मिल जाता है तो उसकी थनों की तंत्रिकाओं के माध्यम से हाइपोथेलेमस तक सन्देश पहुँचता है । सन्देश मिलने के बाद पिटयूटरी ग्रंथि से ऑक्सिटोसिन हारमोन रीलिज होता है । यह ऑक्सिटोसिन हारमोन रक्त के माध्यम से प्रवाहित होकर स्तन ग्रंथियों तक पहुँचता है। एल्वियोलस के चारों तरफ मायोएपिथिलियल कोशिकाएँ होती है । ऑक्सिटोसिन हारमोन इन मायोएपिथिलियल कोशिकाओं को अपना निशाना बनाता है । दूसरे शब्दों में ऑक्सिटोसिन हारमोन मायोएपिथिलियल कोशिकाओं को प्रभावित करता है जिससे मायोएपिथिलियल कोशिकाओं में संकुचन पैदा होती है । इस संकुचन के फलस्वरूप प्रत्येक एल्वियोलस से दूध निचुड़कर पहले तो छोटी वाहनियों में फिर बड़ी वाहनियों से होते हुए ग्रंथियो की टंकी में आ जाता है । एल्वियोलस से टंकी में दूध निचुड़ कर आने की घटना को ही 'पावस' कहते है ।

वाहनियों से होते हुए दूध थन की टंकी में आता है । टंकी से जब दूध नीचे थन में आता है तो दूध के दबाव के कारण थन दूध से भर जाता है । जिससे थन फूल कर मोटा हो जाता है । पावस की प्रक्रिया शुरु होने

के 60 से 90 सेकण्ड के बाद थन दूध से भरकर मोटा हो जाता है। लेवटी से दूध खाली करने तकऑक्सिटोसिन का प्रभाव जरूरी होता है । अगर पशु में पर्यप्त मात्रा में या बिल्कुल भी ऑक्सिटोसिन नहीं बनता है तो उसका 80 प्रतिशत तक दूध नहीं निकल पाता है ।

कई बार जब पशु दूध नहीं देता है तो हम उसे डराते या पीटते हैं । डराने से या पीटने से पशु के शरीर में एड्रेनालाईन हारमोन पैदा होता है । एड्रेनालाईन हारमोन ऑक्सिटोसिन हारमोन के प्रभाव को कम कर देता है । अतः हमें पशु को डराना या पीटना नहीं चाहिए ।

सिमलेज हर्ब्स बोलस उपरोक्त पाँचो चरणों को प्रभावित करके पशु की दूध उतारने में मदद करती है ।

सिमलेज हर्ब्स की प्रत्येक बोलस में मिलता है ।	
एलिमन्टल कैल्शियम	300 मि० ग्रा०
एलिमन्टल फास्फोरस	150 मि० ग्रा०
विटामिन ए	6300 आई० यू०
विटामिन डी3	630 आई० यू०
विटामिन एच	100 माइक्रोग्राम
जीवन्ती	1800 मि० ग्रा०
शतावरी	500 मि० ग्रा०
अश्वगन्धा	1300 मि० ग्रा०
जटामासी	600 मि० ग्रा०
शर्पगन्धा	100 मि० ग्रा०
तगर	100 मि० ग्रा०
मेंथी	1000 मि० ग्रा०

जीवन्ती, शतावरी अश्वगन्धा और मेंथी पशुओं में दूध के निर्माण को बढ़ाती है जबकि जटामासी, शर्पगधा और तगर मानसिक समस्याओं को दूर करके पशु की दूध उतारने मे मदद करती है ।

जीवन्ती :- यह पशुओं में दूध के स्त्राव व निर्माण को बढ़ाकर पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है ।

शतावरी :- यह पशुओं में दूध के स्त्राव को बढ़ाती है । दूग्ध कौशिकाओं को विकसित करती है । यह खुन में

प्रोलेक्टिन हारमोन के स्तर को बढ़ाकर पशुओं की दूध उतारने में मदद करती है । साथ में शतावारी दूध ग्रंथियों के कोशकीय विभाजन को भी बढ़ाती है जिससे पशुओं की दूध धारण करने की क्षमता बढ़ जाती है ।

अश्वगन्धा : यह पशुओं में दूध के स्त्राव को बढ़ाती है । इसमें एंटीऑक्सीडेंट गुण होने के कारण यह पशुओं को गर्मी के दुष्प्रभाव से बचाकर पशुओं के प्रदर्शन में सुधार लाती है ।

मेंथी : मेंथी को काफी पुराने समय से दवा के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है । यह पशुओं में दूध के स्त्राव के बढ़ाती है । यह शरीर के अन्दर की ग्रंथियों की कार्यप्रणाली में सुधार करके ग्रोथ हारमोन, थाइरोइड हारमोन और प्रोलक्टिन हारमोन के स्तर को बढ़ाकर पशुओं में दूध बढ़ाती है ।

जटामासी : इसकी मुख्य गतिविधि एंटीऑक्सीडेंट होती है जिससे यह तनाव दूर करती है । यह पशुओं में रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाती है । पशुओं को तसल्ली देती है तथा अवसाद से बचाती है ।

शर्पगन्धा : यह पशुओं की मानसिक परेशानियों को दूर करती है । पशुओं को उदासी से बचाती है, चिन्ता को दूर करती है और दूध न उतारने के मानसिक कारणों को दूर करती है ।

तगर : यह एंटीऑक्सीडेंट का काम करती है तथा पशु को तनाव में भी कार्य करने के लिए प्रेरित करती है और सूजन को दूर करती है । यह पशुओं की मानसिक परेशानियों को दूर करके पशु की दूध उतारने में मदद करती है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में जब पशु दूध उतारने में विफल हो जाए तो सिमलेज हर्ब्स का इस्तेमाल करना चाहिए :

जब पशु मानसिक परेशानियों के कारण दूध न उतारने पाए, जैसे कि : -

जब पशु का बच्चा मर जाए :- जब पशु का बच्चा मर जाता है तो पशु मानसिक रूप से परेशान हो जाता है और दूध नहीं देता है । इस अवस्था में हम पशु को ऑक्सीटोसिन इन्जेक्शन लगाकर पशु को दूध उतारने के लिए मजबुर करते हैं । सिमलेज हर्ब्स में उपस्थित जटामासी, शर्पगन्धा और तगर पशु की मानसिक परेशानियों को दूर करके पशु को दूध देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं । अतः जब भी पशु का बच्चा मर जाए या मालिक बदल जाए या स्थान बदल जाए और पशु मानसिक रूप से परेशान हो जाए तो

उसे ऑक्सीटोसिन का इन्जेक्शन न लगाकर सिमलेज हर्ब्स खिलाना चाहिए ताकि पशु कुदरती तौर पर दूध उतारने लग जाए । ऑक्सीटोसिन इन्जेक्शन को ना सिमलेज हर्ब्स को हाँ

जब पशु तनाव में हो, जैसे कि : -

- टीकाकरण के कारण
- मौसम में बदलाव के कारण
- बहुत ज्यादा गर्मी या सर्दी के कारण
- पशु का इलाज होने के कारण
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के कारण

खुराक :-

दो बोलस सुबह दो बोलस शाम,

तीन दिनों तक

उपलब्धता : एक डिब्बे में 12 बोलस

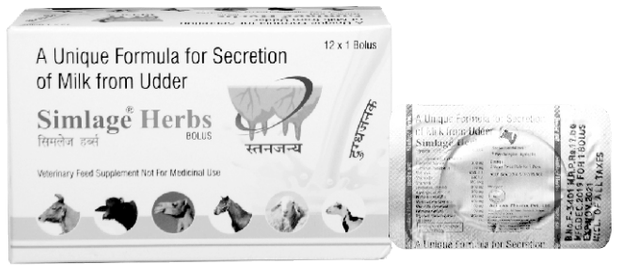

सिमलेज हर्ब्स बोलस : दूध उतारने में सहायक

दूध का रिकार्ड रखने का तरीका

दुधारु पशु का नाम / पहचान : .....

माह :

1	शाम		11	शाम		21	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
2	शाम		12	शाम		22	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
3	शाम		13	शाम		23	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
4	शाम		14	शाम		24	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
5	शाम		15	शाम		25	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
6	शाम		16	शाम		26	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
7	शाम		17	शाम		27	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
8	शाम		18	शाम		28	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
9	शाम		19	शाम		29	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
10	शाम		20	शाम		30	शाम	
	सुबह			सुबह			सुबह	
						31	शाम	
							सुबह	

गोल्डफोस ग्रेन्यूलस

(प्रोटिन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट)

पशुपालक मित्रों, फास्फोरस की शरीर को ज्यादा मात्रा में जरूरत होती है । यह शरीर में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । लगभग 80 प्रतिशत फास्फोरस शरीरिक ढ़ाँचे में पाया जाता है । यह हड्डियों और दाँतो का मुख्य घटक होता है और बाकी फास्फोरस प्रोटिन और फैट के साथ पूरे शरीर में विस्तार से फैला होता है। पशुओं में फास्फोरस की कमी की अवस्था में गोल्डफोस ग्रेन्यूलस का इस्तेमाल करना चाहिए ।

गोल्डफोस ग्रेन्यूलस के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता है :

50 ग्राम प्रोटिन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट

पशुपालक मित्रों, गोल्डफोस ग्रेन्यूलस के खास फायदे इस प्रकार है :-

- गोल्डफोस पशुओं के शरीर में जल्दी अवशोषित होता है, पशुओं को ज्यादा उपलब्ध होता है तथा दाने-चारे में स्थिर रहता है । ग्रेन्यूलस (दानेदार) होने के कारण गोल्डफोस जमता नहीं है ।
- पशुओं में फास्फोरस की कमी को होने से रोकता है तथा फास्फोरस की कमी हो जाने पर उसे दूर (ठीक) करता है ।
- पशुओं के पेशाब में रक्त आने से रोकता है । यदि रक्त आने लग जाए तो उसे दूर (ठीक) करता है ।
- पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार करता है और उनके शारिरीक विकास को बढ़ाता है ।
- प्रोटिन से लेपित होने के कारण पशुओं को उच्च कोटि का बाइपास प्रोटिन प्रदान करता है ।
- रुमन के वातावरण पर दुष्प्रभाव नहीं डालता है । जैसा इसका नाम, सोडियम एसिड फास्फोट, वैसा इसका काम । अर्थात् सोडियम एसिड फास्फेट को खिलाने से पशुओं के रुमन की pH एसिडिक (सामान्य से कम) हो जाती है । जब रुमन की pH सामान्य से कम या ज्यादा हो जाए तो फरमन्टेशन की प्रक्रिया सुचारू रूप से नहीं हो पाती है और परिणामस्वरूप पशु अस्थाई तौर पर दाना-चारा छोड़ देता है। इसलिए गोल्डफोस को प्रोटिन से लेपित किया गया है जिससे रुमन में उपस्थित लाभकारी सुक्ष्म जीवाणु गोल्डफोस पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाते क्योंकि गोल्डफोस सीधा छोटी आँत में अवशोषित होता है । इस प्रकार गोल्डफोस खिलाने से पशु दाना-चारा नहीं छोड़ता है ।

निम्नलिखित परिस्थितियों में गोल्डफोस ग्रेन्यूलस का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए :

जब पशुओं के पेशाब में खून आने लग जाए : जब पशु के शरीर में फास्फोरस की बहुत ज्यादा कमी हो जाती है तो

उसके पेशाब में खून आने लगता है । देहात में कहते है कि हमारा पशु लाल पेशाब कर रहा है । लाल पेशाब यानि पशु के शरीर में फास्फोरस की बहुत ज्यादा कमी होना । अतः जब भी पशु लाल पेशाब करने लग जाए तो उसे तुरन्त 100 ग्राम गोल्डफोस सुबह-शाम खिलाएँ ताकि पशु के शरीर में फास्फोरस की पूर्ति हो जाए और पशु सामान्य पेशाब करने लग जाए । इसके बाद 1.2 कि०ग्रा० बायोबीऑन गोल्ड में 500 ग्राम गोल्डफोस मिलाकर रोज़ाना 100 ग्राम खिलाएँ ताकि पशुओं में फिर से लाल पेशाब आने की सम्भावना ही समाप्त हो जाए ।

जब पशु सामान्य खुराक के अलावा लकड़ी, कपड़ा, मिट्टी या अन्य कोई न खाने योग्य पदार्थ खाने लग जाए : जब पशु के शरीर में फास्फोरस की बहुत ज्यादा कमी हो जाती है तो वह लकड़ी, कपड़ा, मिट्टी या अन्य कोई न खाने योग्य वस्तु खाने लग जाता है । कुछ पशु दीवार या खोर चाटने लग जाते हैं । जब पशु न खाने योग्य वस्तु खाने लग जाए तो उन्हें तुरन्त गोल्डफोस ग्रेन्यूलस खिलाना चाहिए ताकि पशु न खाने योग्य वस्तुएं खाना छोड़ दे ।

जब पशु बांझपन का शिकार हो जाए : कैल्शियम और फास्फोरस दो मुख्य खनिज तत्व होते हैं । इनमें से अगर एक भी खनिज तत्व की पशु के शरीर में कमी है तो पशु हीट में नहीं आऐगा । अतः पशुओं के शरीर में कैल्शियम-फास्फोरस की पूर्ति के लिए 1.2 कि०ग्रा० बायोबीऑन गोल्ड में 500 ग्राम गोल्डफोस मिलाकर, इस मिश्रण का 100 ग्राम सुबह-शाम खिलाएँ ताकि पशु के शरीर में कैल्शियम-फास्फोरस की पूर्ति रहें और इन दोनों मुख्य खनिज तत्वों के कारण पशु मे कोई समस्या न आने पाए ।

जब पशु मिल्क फीवर में आ जाए : जब पशु मिल्क फीवर में आ जाता है तो हम उसकी नस में कैल्शियम की बोतल लगवाते है । आई वी कैल्शियम देने मे बाद अगर हम सावधानी के तौर पर पशु को एक डिब्बा गोल्डफोस का खिला देगें तो पशु की फिर से मिल्क फीवर में आने की सम्भावना ही समाप्त हो जाऐगी और प्रजनन के बाद घटित होने वाले घटनाएँ भी सामान्य रूप से होती रहेंगी ।

जब पशु के थनों से दूध अपने आप टपकने लग जाए : ज्यादा दूध देने वाले पशु जब ब्याने के नजदीक होते हैं, तो उनके थनों से दूध अपने आप टपकने लगता है, विषेशकर संकर नस्ल की गाय, क्योंकि दूध के भार के कारण थन की स्फिंकटर मसल ढीली हो जाती है जिससे पशुओं का दूध टपकना शुरु हो जाता है । पशुओं का दूध अपने आप टपकने से रोकने के लिए उन्हें तुरन्त अडर-एच के साथ गोल्डफोस खिलाये ताकि थनों की स्फिंकटर मसल को मजबूती प्रदान हो जाए और आपने आप दूध टपकना बन्द हो जाए ।

जब पशु स्वयं का पेशाब पीने लग जाए : कुछ पशुओं में जब फास्फोरस की कमी हो जाती है तो वे अपना

ही पेशाब पीने लग जाते हैं । पशुओं की इस गन्दी आदत को छुड़वाने के लिए उन्हें तुरन्त गोल्डफोस खिलाना चाहिए ताकि वे अपना पेशाब पीना बन्द कर दें ।

जब पशु की त्वचा लाल-लाल हो जाए : कई बार जब हम अपने पशुओं को लिक्विड कैल्शियम पिलाते हैं तो कुछ समय बाद लिक्विड कैल्शियम के कारण पशुओं की त्वचा थोड़ी लाल-लाल हो जाती है क्योंकि कुछ लिक्विड कैल्शियम में कैल्शियम-फास्फोरस का सही अनुपात नहीं मिलता है और परिणामस्वरूप पशु की त्वचा लाल-लाल हो जाती है । पशु की त्वचा को एकदम काली स्याह बनाने के लिए उन्हें तुरन्त गोल्डफोस खिलाना चाहिए ताकि ऐसे पशुओं में फास्फोरस की पूर्ति हो जाए और उनकी त्वचा भी काली स्याह हो जाए ।

सावधानी के तौर पर : 1.2 कि०ग्रा० बायोबीऑन गोल्ड में 500 ग्राम गोल्डफोस मिलाकर 50 ग्राम सुबह-शाम खिलाएँ । ऐसा करने से पशु के शरीर में कैल्शियम-फास्फोरस की कभी भी कमी नहीं होगी और पशु की दिनचर्या सामान्य रूप से जारी रहेगी ।

खुराक :

बड़े पशुओं मे 100 ग्राम रोज़ाना

छोटे पशुओ में 30 ग्राम रोज़ाना

फीड में मिलाने के लिए :

एक किलोग्राम फीड में 40 ग्राम गोल्डफोस मिलाना है ।

उपलब्धता : 500 ग्राम

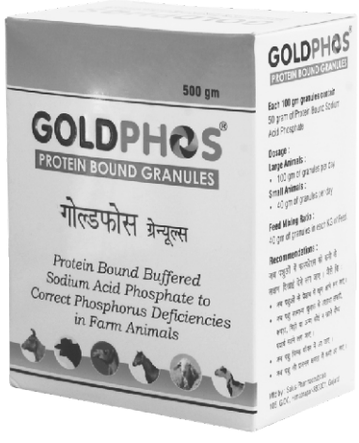

गोल्डफोस : पशुओं में फास्फोरस की कमी को दूर करने के लिए प्रोटिन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट

पशुओं के छोटे बच्चों की देखभाल करने का तरीका

किसी भी डेयरी फार्म की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस फार्म पर छोटे बच्चों की देखभाल सफलतापूर्वक की जाती है या नहीं क्योंकि छोटे बच्चे ही डेयरी फार्म का भविष्य होते हैं। अगर किसी फार्म पर छोटे बच्चों की मृत्यु दर ज्यादा है तो इस बात की पूरी सम्भावना है कि वह डेयरी फार्म नुकसान में ही चल रहा होगा । छोटे बच्चों की जन्म के तुरन्त बाद देखभाल करना आवश्यक है । इसके लिए आपको निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :

1. छोटे बच्चों का जन्म स्थान सुखा, स्वच्छ और आरामदायक होना चाहिए। बच्चों को अधिक गर्मी व सर्दी से बचाकर साफ जगह पर रखना चाहिए ।
2. जन्म के तुरन्त बाद नवजात बच्चों में संक्रमण का खतरा बहुत ज्यादा होता है इसलिए बच्चों को दूषित पदार्थो के संपर्क में आने से बचाना चाहिए । जन्म के 1-2 घण्टे के अंदर ही बच्चों को खीस अवश्य पिलाना चाहिए । इसके लिए जेर गिरने का इंतजार बिल्कुल नहीं करना चाहिए । 1-2 घण्टे के अंदर पिलाया हुआ खीस बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास करता है। बच्चों को उनके वजन का 10 प्रतिशत दूध अवश्य पिलाना चाहिए। उदाहरण के लिए आमतौर पर एक नवजात बच्चा 30 किलोग्राम का तो होता ही है । वजन के अनुसार उन्हें 3 किलोग्राम दूध (1.5 किलोग्राम सुबह व 1.5 किलोग्राम शाम) पिलाना चाहिए । इस बात का ध्यान जरुर रखना चाहिए की पहला दूध पीने के बाद बच्चा लगभग दो घण्टे के अंदर मल त्याग अवश्य कर दें ।
3. जन्म के ठीक बाद बच्चों के नाक-मुंह अैर शरीर के ऊपर की जेर या झिल्ली हटा देनी चाहिए ।
4. आमतौर पर जच्चा पशु बच्चे को जन्म देते ही उसे जीभ से चाटने लगती है। इससे बच्चे के शरीर को सूखने में आसानी होती है, जिससे बच्चे का तापमान नहीं गिरता, त्वचा साफ हो जाती है और श्वसन तथा रक्त संचार सुचारू रुप से चलने लगता है । इससे माँ और बच्चे का बंधन पनपता है तथा माँ को कुछ लवण और प्रोटीन की भी प्राप्ति हो जाती है ।
5. बच्चे की नाभि को शरीर से तीन-चार अंगुली नीचे (2-5 से.मी.) पास-पास दो स्थानों पर सावधानी से मजबूत धागे से बांधे । अब नये ब्लेड या साफ कैंची से दोनों बन्धी हुई जगहों के बीच (शरीर से 1 से.मी. नीचे) नाभि को काट दें । इसके बाद कटी हुई नाभि पर टिंचर आयोडीन या बोरिक एसिड अथवा कोई भी अन्य एंटिबायोटिक अवश्य लगा देना चाहिए ।

6. बच्चों के वजन का ब्योरा रखना चाहिए ।
7. छोटे बच्चों को जन्म के दसवें दिन 10 एम. एल. मिनवर्म और इसके 21 दिन बाद 20 एम. एल. मिनवर्म पिलाकर उनके पेट के कीड़ों का सम्पूर्ण सफ़ाया कर देना चाहिए । उदाहरण के तौर पर :-

1, 2, 3 — छोटे बच्चों को केवल खीस पिलायें ।

4, 5, 6, 7, 8, 9 — छोटे बच्चों को केवल दूध पिलायें ।

10 → दसवें दिन 10 एम.एल. मिनवर्म पिलाकर पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें ।

11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30 — ग्यारहवें दिन से लेकर तीसवें दिन तक 20 एम. एल. माइक्रोटोन प्रतिदिन पिलायें।

31 → 20 एम.एल. मिनवर्म पिलाकर पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें ।

मुर्राह भैंस

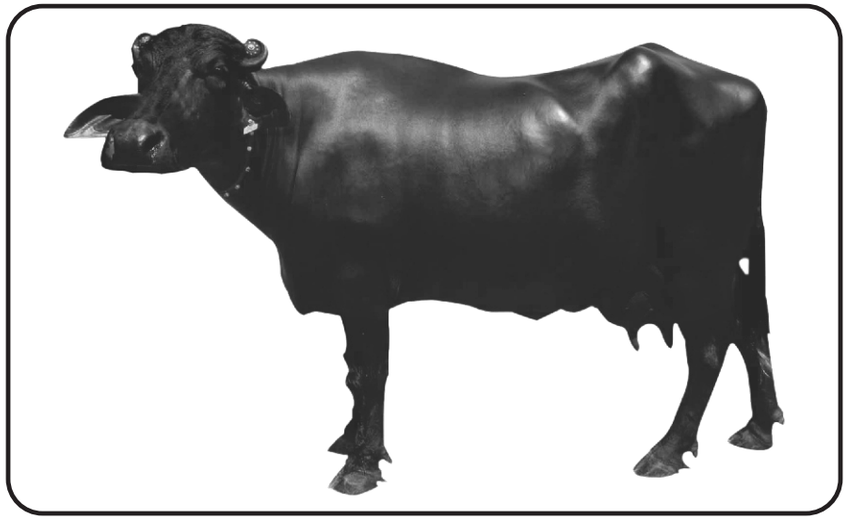

- स्याह काला रंग ।
- सींग छोटे और अधिक मुड़े (रुण्डे) होते हैं ।
- पूंछ लम्बी होती है जो टखनों तक लटकती रहती है जिसके निचले हिस्से के कुछ बाल सफेद हो सकते हैं ।
- इस नस्ल की भैंसों की लेवटी व थन अच्छी तरह से विकसित होते हैं । पिछले थन सामान्यता आगे वाले थनों से बड़े होते है ।
- भैंसों का शरीर भारी भरकम होता है। गर्दन व सिर अपेक्षाकृत हल्के और कूल्हे चौडे होते हैं ।
- शरीर के किसी भी हिस्से पर सफेद रंग के धब्बे नहीं होते ।

साहिवाल गाय

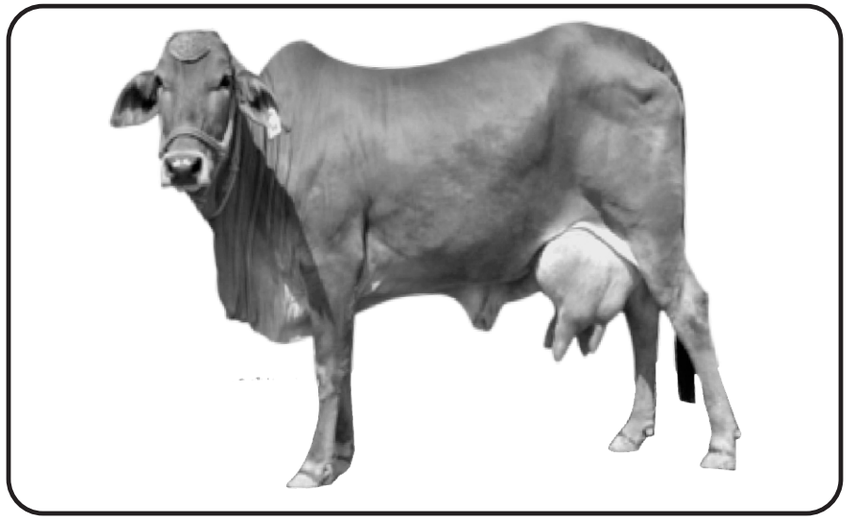

- लाल और गहरा भूरा रंग ।
- साहिवाल गाय का सिर चौड़ा सींग छोटी और मोटी तथा माथा मझोला होता है ।
- साहिवाल गाय का शरीर लम्बा और मासंल होता है तथा इनकी टाँगे छोटी होती है ।
- साहिवाल गाय की पूंछ पतली और छोटी होती है ।
- कभी-कभी साहिवाल गाय के शरीर पर सफेद चमकदार धब्बे हो सकते है ।

पशु पालन में रखी जाने वाली सावधानियाँ

- पशुओं को, जहाँ तक हो सके, नाल से दवा नहीं देनी चाहिए ।
- दूध मुट्ठी से निकालना चाहिए ।
- पशुओं को ऑयोडीन युक्त नमक अवश्य खिलाना चाहिए ।
- थनैला रोग होने पर तुरन्त नजदीक के डॉक्टर साहब से सम्पर्क करना चाहिए ।
- पशुओं को हर तीन महीने बाद पेट के कीड़ों की दवा अवश्य देनी चाहिए ।
- नस्ल सुधार के लिए कृत्रिम गर्भाधान का प्रयोग करना चाहिए ।
- कोई भी पॉउडर खिलाने से पहले अगर हम पशुओं के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करेंगे तो उस पॉउडर का ज्यादा लाभ मिलता है ।
- सम्भव हो तो पशुओं के दूध का रिकार्ड रखना चाहिए । दूध का रिकार्ड रखने का तरीका इस पुस्तिका में बताया गया है ।
- कैल्शियम में विटामिन की छोटी शीशी मिलाकर नहीं रखनी चाहिए ।
- प्रत्येक महीने पशुओं को खनिज मिश्रण अवश्य खिलाना चाहिए ।

अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने का तरीका

पशुपालक मित्रों, अब बात आती है कि पशुओं से ज्यादा से ज्यादा दूध किस प्रकार प्राप्त किया जाए। इसके लिए आपको योजनाबद्ध तरीके से काम करना होगा। कोई भी फसल लेने के लिए आपको उसके बोने का समय, खाद-पानी डालने का समय, नलाई (खोदी) का समय तथा कटाई का समय सब कुछ ज्ञात होता है तभी तो आप अच्छी फसल ले पाते हैं। इसी प्रकार अगर आप निम्नलिखित योजनाबद्ध तरीके से पशु की देखभाल करेगें तो आपको बहुत अधिक मात्रा में दूध की प्राप्ति होगी :

पहला कदम :

जब पशु के प्रसव का लगभग एक महीना रह जाए तब आप उसे 10 एम.एल. अडर-एच रोज़ाना 25 दिनों तक पिलायें ताकि उसकी ओहंडी में अगर कोई विकार हो तो वह ठीक हो जाए। अगर कोई विकार न हो तो उसकी बड़ी अच्छी ओहंडी (लेवटी, गादी, ऐन, जड़) बन जाए । जब पशु के प्रसव के लगभग 15 दिन रह जाएं तब उसे 100 ग्राम रोज़ाना एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाएँ ताकि पशु को बच्चे के विकास के लिए तथा अगले ब्याँत में ज्यादा दूध देने के लिए भरपूर ऊर्जा मिल जाएं ।

दूसरा कदम :

प्रसव वाले दिन से आप पशु को 100 एम.एल. यूट्राविन 10 दिनों तक अवश्य पिलायें ताकि पशु पूरी जेर डाल दे और बच्चेदानी की बढ़िया सफाई हो जाए । इस दिन से एक सप्ताह तक एनरबूस्ट पॉउडर 100 ग्राम सुबह-शाम अवश्य खिलाएँ ।

तीसरा कदम :

प्रसव के सात दिन बाद मिनवर्म 90 एम.एल. या मिनफ्लुक-डीएस बोलस से पशु के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें तथा एनरबूस्ट पॉउडर 100 ग्राम प्रतिदिन 21 दिनों तक खिलाएँ ।

चौथा कदम :

प्रसव के ग्यारहवें दिन से आप पशु को डाइजामैक्स फोर्ट बोलस 2 सुबह 2 शाम तथा सिमलेज बोलस एक सुबह एक शाम दस दिनों तक दें और फिर बहुत अधिक दूध का नजारा लें।

पाँचवाँ कदम :

प्रसव के एक महीना बाद से बायोबीऑन-गोल्ड पॉउडर 50 ग्राम रोज़ाना खिलाएँ ताकि आपका पशु दूध के उच्चतम स्तर को बनाए रखे और समय से गर्भ धारण कर सकें ।

पशुपालक मित्रों, अगर आप इस प्रकार योजनाबद्ध तरीके से पशु की देखभाल करेंगे तो आपकी प्रत्येक मुर्राह भैंस 20 से 25 लीटर दूध व हर साल एक बच्चा देगी ।